पार्ट - 8 [हिन्दी]

अफ़कार

शोबा ए इस्लाह   शोबा ए तहक़ीक़   शोबा ए तनक़ीद

- सय्यद अहमद रिफाई रहिमतुल्लाह अलेह के लिए क़ब्रे अनवर से दस्ते मुबारक का ज़ुहूर
- हया और हमारा मुआशरा
- मौजूदा ज़माने में सीरते नब्वी ﷺ एक फलाही रास्ता
- मौजूदा वक़्त में मुसलमानों की ख़ामोशी मुस्तक़बिल के लिए नुकसानदेह
- तालिमाते औलिया ए किराम
- यूट्यूब की कमाई का शरई हुक्म
- अइम्मा हज़रात और मुआशी बहरान से निजात की तदाबीर
- मुत्तहिदा सुन्नी क़यादत: मुमकिन या महज़ ख़्याल!
- हदीसे पाक "لا نبی بعدی" यानी "मेरे बाद कोई नबी नहीं" की तहकीक
- क़ायदीन की खामोश मिज़ाजी:मिल्लत की तबाही का पेश खेमा

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

बरेली शरीफ

www.nizamemustafa.in

Book Name: AFKAR PART 8

Language: Hindi

Hijri Date: 14 Shaban ul Muazzam 1443 H

English Date: 18 March 2022 [Friday]

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa ﷺ (India) or TNM Official

Any Query, contact us: 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://www.nizamemustafa.in/

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

अफ़कार

पार्ट – 8 [हिन्दी]

शोबा ए इस्लाह **शोबा ए तहक़ीक़** **शोबा ए तनक़ीद**



नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

बरेली शरीफ

www.nizamemustafa.in

पेशे लफ़्ज़

कुव्वते फिक्रो अमल पहले फना होती है

फिर किसी क़ौम की शौकत पर ज़वाल आता है।

उम्मत ए मुस्लिमा के मौजूदा हालात किसी से पोशीदा नहीं है। हुकूमत इनके पास नहीं, इक़तिदारा इनका ख़त्म हो चुका लेकिन एक चीज़ इस उम्मत के पास बाकी थी जिसे फिक्र कहते हैं जिस फिक्र को ले कर ये उम्मत मेहनत और मशक्कत कर के अपने दुश्मन को खाक में मिला सकती थी लेकिन अब वो फिक्र ही इस कौम के दिलों से फ़ना होती जा रही है और ये कौम अगियार की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ चुकी है सब कुछ ख़त्म हो चुका है फिर भी हमारे हालात क्या हैं? वही गुनाहों में लुथड़ी ज़िंदगी जीते जा रहे हैं।

अरे ये तो वक़्त अल्लाह की बारगाह में रो रो कर गिड़गिड़ा कर माफ़ी मांगने का था कि हम अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार होते कि अल्लाह हमें माफ़ फरमा दे। हमें दर गुज़र फरमा दे। हम अपने

गुनाहों से तौबा करते हैं हमने तेरे एहकामात की पाबंदी नहीं की इसलिये हम पर ये मुसीबतें आई हुई हैं। ये तो वक़्त अपने प्यारे नबी ﷺ की बारगाह में रुजूअ़ करने का था और आप ﷺ के सदके अल्लाह से दुआ करने का था लेकिन हम गफलत में मुब्तिला हैं हम वही कर रहे हैं जो हमरा नफ्स हम से कह रहा है।

इस मैग्ज़ीन को नशर करने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ ये है कि उम्मत ए मुस्लिमा की फिक्र को नई ताज़गी दी जाए और जो बुराइयाँ और नफरतें हमारी क़ौम के दरमियान पनप रही हैं और बुज़दिली हमारा शिआर बन चुकी है इन सब को ख़त्म करने की कोशिश की जाए ये तभी हो सकता है जब मुआशिरे का हर फर्द बुराइयों को मिटाने के लिए जद्दो जिहद करे और उसको अपना एक अहम फर्ज़ समझ कर काम करे फिर वो दिन दूर नहीं जिस दिन हम अपने खोए हुख वक़ार वापस पा लेंगे, ज़रूरत है कौम के फिक्रो अमल पर काम करने की।

क़ारेईन से गुज़ारिश है कि इस मैग्ज़ीन को पढ़ने तक ही महदूद न रखें बल्कि इससे सबक हासिल कर अपनी ज़िन्दगी में

इस्लाम के मुताबिक अमल करने की ज़रूरत है इस मैग्ज़ीन को नशर करने का मकसद तभी हासिल हो सकता है जब इसको पढ़ने वाला अल्लाह की तौफीक़ से इन तालीमात पर अमल पैरा हो अल्लाह हमारा हामी और नासिर हो।

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

सय्यद अहमद रिफाई रहिमतुल्लाह अलेह के लिए क़ब्रे अनवर से दस्ते मुबारक का ज़ुहूर

📝 इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलेह रहमा

بسم الله الرحمن الرحيم

वली ए कबीर और इमामे शहीर हज़रत सय्यद अहमद रिफाई रदिअल्लाहु अन्हु के लिए नबी ए करीम ﷺ का अपनी क़ब्र शरीफ से दस्ते मुबारक को बाहर निकालने के बारे में सवाल हुआ कि या वो वाक़िया मुमकिन है या नहीं? और क्या इस मशहूर रिवायत की सनदें आली और सही हैं या नहीं? मैंने इसी सवाल के जवाब में ये रिसाला तहरीर किया है और इसका नाम रखा है:

"الشرف المحتم فيما من الله به على وليه السيد احمد الرفاعي رضي الله عنه من تقبيل يد النبي صلى الله عليه وسلم"

सबसे पहले जो कहना चाहता हूं वो यह है कि हमारे नज़दीक हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की हयात और तमाम दूसरे अंबिया की हयात क़त'ई और यकीनी है और इस यकीन के लिए हमारे पास यकीनी दलाइल और बराहीन हैं सही रिवायतें और मुतावातिर खबरें हैं खुद मैं (इमाम सुयूती रहमतुल्लाह अलैह) ने



हयाते अंबिया के मौज़ू पर एक खास किताब तस्नीफ की है जिसमें दलाइल और अख़बार को तफ़सील से ज़िक्र किया है।

अंबिया अलैहिस्सलाम अपनी कब्रों में ज़िंदा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं:

यहां मैं उन दलाइल में से चंद का ज़िक्र करना चाहूंगा "इमाम अबू नुऐम ने 'हिलया' में हज़रत इब्ने अब्बास रदिअल्लाह अन्हु से रिवायत किया है कि:

''ان النبي صلى الله عليه وآله وسلم مر بقبر موسى عليه الصلاة و السلام وهو قائم يصلى فيه

नबी ए करीम ﷺ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की कब्र के पास से गुज़रे तो पाया कि वो कब्र में खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं।

इमाम अबू याला ने अपनी मुसनद में हज़रत अनस रदिअल्लाहु अन्हु से हदीस बयान की है कि:

''الانبياء احياء في قبور هم يصلون

तर्जुमा: अंबिया अपनी कब्रों में जिंदा है नमाज़ पढ़ते हैं।

रसूल अल्लाह ﷺ के लिए मर्तबा ए नबुव्वत और शहादत दोनों जमा थे:



और यह बात पोशीदा नहीं है की अल्लाह तआला ने हमारे नबी सय्यदुना मोहम्मद ﷺ के लिए मर्तबा ए नबुव्वत और शहादत दोनों को इकट्ठा कर दिया है यानी दोनों मर्तबे आपकी ज़ात में जमा हो गए हैं और उसकी दलील इमाम बुखारी और इमाम बैहक़ी की रिवायत करदा वो हदीस है जिसे इन हज़रात ने हज़रत आयशा सिद्दीका रदिअल्लाह अनहा से तखरीज किया है की नबी ए करीम ﷺ अपने मर्ज़े वफात में फरमाया करते थे कि:

لم ازل اجد الم الطعام الذي اكلت بخيبر فهذا أو ان انقطاع ابهری من ذالك السم"

"मैं अब भी खैबर में खाए गए जहरीले खाने की तकलीफ महसूस करता हूं उस जहर के असर से "अबहुरी" रग के मुनक़ता होने का वक़्त आ गया है।

लिहाज़ा नस्से क़ुरआनी के मुताबिक आप ﷺ की हयात साबित शुदा है क्यूंकि फरमाने इलाही है की

لا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أمواتا بل أحياء عند ربهم يرزقون

तर्जुमा: अल्लाह की राह में मारे जाने वालों को मुर्दा मत समझो बल्कि वो अपने रब के पास ज़िंदा हैं रिज़्क पा रहे हैं।"

अंबिया ए किराम, शोहदा से इस बात के ज़्यादा हक़दार हैं और हमारे नबी करीम ﷺ तमाम अंबिया ए किराम صلوۃ اللہ علیھم أجمعین से ज़्यादा हक़ रखते



हैं और आप ﷺ का ज़्यादा हकदार होना उन फ़ज़ाइलो खसाइस के सबब है जो अल्लाह तआला ने आप ﷺ को अता किए हैं निहायत मोतमद मुहद्दिसीन ने अंबिया की हयात को मुस्तकिल मौज़ू बनाया है बाज़ अंबिया ए उज़्ज़ाम को खुद हमारे नबी करीम ﷺ ने बाहयात देखा है और आप ﷺ ने ही हमें खबर दी है और बिलाशुबह आपकी खबर सच्ची है कि हमारे दुरूद आप पर पेश किए जाते हैं और हमारे सलाम आप ﷺ पर पेश किए जाते हैं और आप ﷺ उसका जवाब देते हैं जो सलाम पेश करता है।

हज़रत इमाम बारज़ी रहमतुल्लाह अलैह का फरमान:

इमाम बारज़ी रहमतुल्लाह अलैह से हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की हयात के बारे में पूछा तो जवाब दिया कि बाहयात हैं। अय्यामे हर्रा में हज़रत सईद बिन मुसय्यब रदिअल्लाहु अन्हू कब्रे रसूल ﷺ से एक गूंज सुनकर ही नमाज़ की वक्तों के को जानते थे।

अखबारे मदीना में ज़ुबैर बिन बिकार ने हज़रत सईद बिन मुसय्यब रदिअल्लाह अन्हु से रिवायत किया है:

मैं अय्यामे हर्रा में मज़ारे रसूल ﷺ से अज़ान और इक़ामत की आवाज़ सुनता रहता था। यहां तक के लोग वापस आ गए।

अंबिया और औलिया अपनी कब्रों में जिंदा हैं:

इमाम अफीफुद्दीन याफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि:



यह तय शुदा है कि जो चीज़ अंबिया ए किराम के लिए बतौरे मोजिज़ा जायज़, औलिया रदिअल्लाह अन्हुम के लिए बतौरे करामत बिला शर्त जायज़ है।

और फरमाते हैं कि यह ऐसी बात है कि इस बात का इन्कार सिर्फ जाहिल शख़्स ही करेगा। हयाते अंबिया के सिलसिले में उलमा के बेशुमार अक़्वाल हैं लेकिन मैं इतने ही पर इकतिफा करता हूं क्योंकि हयाते अंबिया साबित है और औलिया का अंबिया ए किराम के कलाम को सुनना और उनकी ज़ियारत करना भी सही है लिहाज़ा सय्यदी सय्यद अहमद इब्ने रिफाई रहमतुल्लाह अलैह के लिए नबी ए करीम ﷺ के दस्ते मुबारक का कब्र शरीफ से बाहर आना भी मुमकिन है और इसमें या तो कजी या गुमराही वाला शुबह करेगा या ऐसा मुनाफिक जिसके दिल पर अल्लाह तआला ने मुहर लगा दी है इस सिफत और खूबी या इसके मिस्ल का इन्कार बुरे खात्मे का सबब होता है अल्लाह तआला हमारी हिफाज़त फरमाए क्योंकि इसमें दाएमी मौजिज़े और खुली करामत का इंकार है।

सलाम का जवाब और दस्ते मुबारक का ज़ाहिर होना:

हमसे हमारे शेख, शेखुल इस्लाम कमालुद्दीन इमाम कामिलिया रहमतुल्लाह अलैह ने रिवायत की है उन्होंने हमारे मशाइख के शेख इमाम अल्लामा शेख शमसुद्दीन जज़री रहमतुल्लाह अलैह उन्होंने अपने शेख ज़ैनुद्दीन मुराई रहमतुल्लाह अलैह उन्होंने शेख उस शुयूख शुजाअ और मुहद्दिस और वा'इज़ और फक़ीह और मुक़र्रिर और मुफस्सिर, इमाम और मुक़तदा और हुज्जत शेख



इज़्ज़ुद्दीन अहमद फारूसी रहमतुल्लाह अलैह से उन्होंने अपने वालिद उस्तादे असील अल्लामा जलील शेख अबू इस्हाक़ फुक़रा ए इब्राहीम फारुसी रहमतुल्लाह अलैह से और उन्होंने अपने वालिद इमामे फुक़्हा और मुहद्दिसीन शेख फुक़रा ए अकाबिर उलमा ए आमिलीन शेख इज़्ज़ुद्दीन उमर अबुल फर्ज फारसी वासती قدس الله سرهم أجمعين से रिवायत किया है फरमाते हैं कि 555 हिजरी के हज में मैं अपने शेख और मलजा और सरदार अबुल अब्बास कुतुब व गौस शेख सय्यद अहमद रिफा'ई हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह को अल्लाह की जानिब से हज की सआदत हासिल हुई थी, जब हज़रत रिफा'ई मदीना ए रसूल ﷺ पहुंचे तो नबी ए करीम ﷺ के सामने खड़े होकर लोगों की मौजूदगी में बुलंद आवाज़ से अर्ज किया

السلام علیک یا جدی

यानी ऐ मेरे जद्द आप पर सलाम हो तो रसूल ﷺ ने फरमाया

وعلیک السلام یا ولدی

ऐ मेरे बेटे तुम पर भी सलामती हो इस (जवाब) को मस्जिद-ए-नबवी में मौजूद हर शख्स ने सुना पर यह सुनकर सय्यदुना अहमद रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह पर जज़्ब तारी हो गया। आप थर्रा उठे आपका रंग ज़र्द पड़ गया गिरया व ज़ारी करते हुए घुटने के बल खड़े हो गए और देर तक सिसकियां लेटे रहे फिर अर्ज़ किया ऐ जद्दे करीम!



فی حالة البعد روحی کنت ارسلها

تقبل الارض عنی و هی نائبتی

و هذہ دولة الاشباح قد حضرت

فامدد یمینک کی تحظی بہا شفتی

तर्जुमा: ऐ जद्दे करीम! दूरी की हालत में अपनी रूह और ख़्याल को भेजा करता है जो मेरी नियाबत में आस्तां बोसी करते थे और आज यह दूर उफतादा खुद दरे दौलत पर हाज़िर है लिहाज़ा आप अपने दस्ते करम को दराज़ फरमाएं ताकि मेरे लब, दस्त बोसी की सआदत हासिल कर सकें।

तो रसूल अल्लाह ﷺ ने अपने मुअत्तर दस्ते मुबारक को कब्रे अनवर से बाहर निकाला जिसे नव्वे हज़ार ज़ायरीन के हुजूम में इमाम रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह ने चूमा यह सारे लोग दस्त मुबारक को देख रहे थे उस वक़्त मस्जिद में हुज्जाजे किराम के दरमियान शेख हयात बिन क़ैस हर्रानी, शेख अब्दुल कादिर जीलानी हज़रत गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह मुकीमे बगदाद शेख खमीस और शेख अदी बिन मुसाफिर शामी रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरह भी मौजूद थे। अल्लाह तआला हम सबको इन हज़रात के उलूम और असरार से नफा बख्शे, हम ने भी उन हज़रात के साथ हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ के पाक़ीज़ा दस्ते मुबारक की ज़ियारत की और इसी दिन शेख हयात बिन कैस हुर्रानी रहमतुल्लाह अलैह



ने सय्यद अहमद कबीर रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह से ख़िरक़ा ए खिलाफत हासिल किया और आपके मुरीदीन और मुसतरशेदीन में शामिल हो गए।

सरकार गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की शहादत:

एक दूसरे तरीके से मुझ से रिवायत किया है शेख मोहम्मद अली ने उनसे शेख अबी अल रिजाल यूनीनी बअल'बक्की उनसे शेख अब्दुल्लाह बताएही क़ादरी ने उनसे शेख अली बिन इदरीस याक़ूबी ने और उनसे उनके शेख कुतुब ए यगाना और गौसे ज़माना शेख अब्दुल कादिर जीलानी बग़दादी यानी हुज़ूर गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने रिवायत किया है: फरमाया कि इस महफिले करामत में मैं भी मौजूद था जिसमें अल्लाह तआला ने नबी ए करीम ﷺ की दस्त बोसी के ज़रिए शेख अहमद कबीर रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह की करामत और बुज़ुर्गी का इज़हार किया। याक़ूबी कहते हैं मैंने अपने शेख हज़रत जीलानी गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह से अर्ज़ किया: हुज़ूर हाज़िरीन को इस करामत और बुज़ुर्गी से हसद नहीं हुआ तो यह सवाल सुनकर हज़रत गौसे समदानी रोने लगे और जवाब दिया है इब्ने इदरीस इस पर तो फरिश्तों ने भी रश्क किया है।

अब भी वी नज़ारा मेरी आंखों के सामने है:

एक और तरीके से मुझसे इमाम क़ौसी ने बयान किया है उनसे शेख कुतुबुद्दीन खज़ांची ने उनसे शेख रुकनुद्दीन संजारी ने उनसे उनके शेख अदी बिन



मुसाफिर ने और उनके खादिम शेख अली बिन मौहूब ने बयान किया है दोनों फरमाते हैं कि:

हज वाले साल हम मस्जिद-ए-नबवी में थे तो देखा कि शेख अहमद बिन रिफा'ई हुजरा ए तय्यबा की तरफ रुख करके खड़े हैं और कुछ अर्ज़ कर रहे हैं जिसे बहुत से हज़रात ने याद रखा और नक़ल किया है और जैसे ही आप की गुफ्तगू खत्म हुई फौरन अल्लाह के रसूल ﷺ का दस्ते मुबारक कब्र शरीफ से बाहर निकला और शेख रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह ने उसका बोसा दिया। हम जुमला हाज़िरीन के साथ उस (रूह परवर और ईमान अफ़रोज़) मंज़र को देख रहे थे (शेख अदी के खादिम) इब्ने मौहूब कहते हैं कि:

खुदा की कसम! गोया अब भी वो नज़ारा मेरे सामने है जब सफेद गोरा मोअतदिल हाथ कब्र मुबारक से बाहर निकला जिसकी उंगलियां खूब लंबी लंबी थी गोया बिजली चमक रही हो हरम और अहले हरम गोया सभी रक्स कुनां हों।

लोग सुल्ताने मोहम्मदी और जलाले अहमदी ﷺ से इस क़दर मरऊब और लरज़ां और तरसां थे और (इस मौजिज़ा ए गिरामी) से इस तरह हैरत ज़दा थे गोया कयामत आने वाली हो लोग हैरत और दहशत में बेकरार और बे इख्तियार उठ बैठ रहे थे कभी अल्लाह की तकबीर और बढ़ाई बोलते तो कभी हुज़ूर ए अकरम ﷺ पर सलातो सलाम भेजते।



यह बात मारूफ है कि हज़रत रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह की यह मनक़बत मुसलमानों के दर्मियान दर्जा ए तवातुर को पहुंच चुकी है इसकी सनदें आली और बुलंद मर्तबा हैं और इसकी रिवायतें सही हैं तमाम रावियों का इसकी सेहत और सदाक़त पर इत्तेफ़ाक है और इसका इनकार मुनाफिक़त की निशानियों में से है।

सवाल:

अगर यह कहा जाए कि क्या इस फज़ल और मनक़बत के सबब सय्यद अहमद रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे ज़ायरीन सहाबा के ज़ुमरे में दाखिल हो गए? क्योंकि उन हज़रात को नबी करीम ﷺ की रूयत हासिल हुई है।

जवाबः

हमारे असातिज़ा के मौकिफ के मुताबिक ज़ुमरा ए सहाबियत में उनका दुखूल महल्ले नज़र है सही तर ये है कि ये लोग दाखिल नहीं हैं। यही राय इमाम संजावी वगैरा की है क्योंकि सहाबियत का सुबूत हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की ज़ाहिरी दुनियावी हयात से मुताल्लिक है और यह हयात उखरवी है दुनियावी नहीं है और दुनिया के अहकाम भी इससे मुताल्लिक नहीं हैं। यह वाकिया भी साबित शुदा है कि जब सय्यद अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने दोबारा हज फरमाया और उसी साल में उनका विसाल भी हुआ था तो उन्होंने रोज़ा ए



मुबारक على ساكنها افضل الصلاة و السلام के सामने खड़े होकर इंतिहाई आजिज़ी और खाकसारी से अर्ज़ किया:

ان قيل زرتم بما رجعتم

يا اكرم الرسل ما نقول

तर्जुमा: **अगर कहा गया कि तुमने ज़ियारत की तो क्या लेकर लौटे? तो ए बुज़ुर्ग तरीन रसूल ﷺ हम क्या जवाब देंगे??**

तो कब्रे अनवर से एक आवाज़ आई जिसे मस्जिद में मौजूद हर शख्स ने सुना इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं क्योंकि हबीबे खुदा ﷺ हर एक को उसकी ज़ुबान में मुखातिब करते थे जब हुमैरी ने पूछा:

هل من أمير صيام في امسفر

तो आप ﷺ ने भी हुमैरी लहजे में जवाब दिया और लाम तारीफ की जगह मीम इस्तेमाल फरमाया था और यह मशहूर और मारूफ बात है सय्यद अहमद रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह को भी आप ﷺ का जवाब इसी क़बील से था।

इमाम सुयूती का अक़ीदा:

मैं (इमाम सुयूती रहमतुल्लाह अलैह) अल्लाह तआला के लिए जिस बात को मानता हूं और जिस पर अक़ीदा रखता हूं वो यह है कि सय्यद अहमद इब्ने रिफा'ई फातिमी हुसैनी रदिअल्लाहु अन्हु मारिफत ए इलाही में पायदार पहाड़



की मानिंद थे। अज़ीम तरीन सरदार थे बहुत बड़े वली थे और सुन्नत का ठाठें मारता हुआ बहरे बेकिनार थे आप रहमतुल्लाह अलैह औलिया-अल्लाह और गिरोह ए सूफिया के ऐसे मुस्तनद सरदार थे जिनकी ज़ात पर तरीकत का खात्मा हो जाता है जिनकी अज़मत पर उलमा और औलिया का इजमा वाक़ेए है उनके तमाम मुआसिर औलिया ने उनकी सरबराही और उनके तकद्दुम का एतिराफ किया है। आप के ज़माने में अकाबिर मशाइख ने आपके परचमे रुश्द व हिदायत के लिए राहे सुलूक तय किया है।

आप नबी ए करीम ﷺ की सुन्नत पर पुख्तगी के साथ कारबन्द और उनकी इत्तिबा में खूब रासिखे कदम थे आप ﷺ की ज़ात पर तवाज़ो और हुस्ने अख़लाक का खात्मा हो गया। अल्लाह तआला हज़रत सय्यद अहमद इब्ने रिफा'ई रहमतुल्लाह अलैह के उलूमे रूहानी इमदाद से और हालो क़ाल से मुस्तफीज़ फरमाए और हमें उनके और उनके वली दोस्तों के ज़ुमरे में और अपने नबी हज़रत मोहम्मद ﷺ के लिवा (झन्डे) के साए में रखे।

आमीन!



हया और हमारा मुआशरा

✍ मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

इंसानी मुआशरत की बक़ा के लिए शर्म और हया का होना बहुत ज़रूरी है हया ज़ेवर ए इंसानियत है। हया के दस्तूर को तर्क करके बहुत से अफराद इंसानी हुदूद को पामाल करके जानवरों की फेहरिस्त में दाखिल हो जाते हैं क्योंकि अगर हया नहीं होगी तो इंसान वो सब कर गुज़रेगा जो एक इंसान से उम्मीद नहीं की जा सकती है।

हया के मफहूम से आज भी अक्सर लोग ना आशना हैं आइए जानते हैं कि हया किसे कहते हैं?

हया वह वस्फ है जो उन चीज़ों से रोक दे जो अल्लाह तआला और मख़लूक के नज़दीक ना पसंदीदा हो।

अब हमें देखना होगा कि वो कौन-कौन से काम हैं जिसके करने से अल्लाह तआला ने हमें मना फ़रमाया है और वो कौन-कौन से काम है जो मख़लूक के नज़दीक मा'यूब हैं उसके बाद अगर आप उन कामों को करने से रुकते हैं तो कहा जाएगा कि आप बा हया हैं और अगर उनसे नहीं रुकते तो आप मुआशरे में बेहया कहलाएंगे।



अल्लाह तआला से हया ये है कि उसकी हैबत और जलाल और उसका खौफ दिल में बिठाए और उस काम से बचे जिससे उसकी नाराज़गी का अंदेशा हो।

हर इंसान के पास एक दिल है कोई भी ऐसा काम जिसके करने से दिल में अजीब सी खौफ की कैफियत पैदा हो दिल यह चाहे कि यह काम ना किया जाए तो ज़रूर वो काम गलत है तो अगर इंसान अपने दिल की तरफ भी गौरो फिक्र करे तो बहुत से गुनाहों से बच सकता है।

शर्मो हया का हक़ कैसे अदा हो?:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदिअल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी पाक ﷺ ने फरमाया:

अल्लाह तआला से यूं हया करो जैसे के हया का हक़ है।अब्दुल्लाह इब्ने मसकऊद रदिअल्लाह तआला अन्हू बयान करते हैं: हमने अर्ज़ किया: या रसूल अल्लाह ﷺ बेशक हम अल्लाह तआला से हया करते हैं, और तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं, हुज़ूर ﷺ ने फरमाया:

ऐसा नहीं है लेकिन अल्लाह तआला से हया का हक यह है कि तुम सिर की और उसमें मौजूद चीज़ों की और पेट की और उसके इर्द-गिर्द की अशिया की हिफाज़त करो! और मौत को और कब्र में गलने सड़ने को याद रखो! और जो आखिरत का इरादा रखता है वह दुनिया की ज़ीनत को तर्क कर दे।पस जिसने



ऐसा कर लिया पस बिला शुबह उसने अल्लाह तआला से हया करने का हक़ अदा कर दिया।

(सुनन अल'तिर्मिज़ी, अबवाबे सिफतुल क़य्येमा, बाबे बरक़म: 2458, 4/637)

हमारा मुआशरा:

जब हम मुआशरे की तरफ नज़र करते हैं तो दिल ग़मगीन हो जाता है बच्चे से लेकर बूढ़े तक तमाम के तमाम बे हयाई की दलदल में फंसे हुए हैं बच्चे वालिदैन की तरबियत ना मिलने की वजह से अख़लाके हस्ना से कोसों दूर नज़र आ रहे हैं उनकी ज़ुबानों पर गाली गलौज, रज़ील बातें गर्दिश कर रही हैं जिन बच्चों की तरबियत के ताल्लुक से हदीस में आता है "कि जब तुम्हारे बच्चे 7 साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब 10 साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने के लिए मारो और उनके बिस्तर अपने से अलग कर दो।"

अल्लाहु अकबर! हया की कैसी हसीन तालीम इस हदीसे पाक से मिलती है कि जब वह 10 साल के हो जाएं तो उनके बिस्तर अपने बिस्तर से अलग कर दो बताओ जब यह चीज़ अमल में लाई जाएगी तो पाक़ीज़ा मुआशरा वुजूद में आएगा कि नहीं आएगा?

मगर अफसोस कुछ ऐसे वाकियात सुनने को मिले जिससे कलेजा मुंह को आता है मांओं की बेटों से मोहब्बत जब तक के इस्लामी हुदूद को पामाल ना



करे तब तक तो दुरुस्त है लेकिन अगर यही मोहब्बत शरई हुदूद को पार करके कुछ और बन जाए तो यही अख़लाकी रिश्तो का खून और बे हयाई का सर चश्मा है इसलिए वालिदैन को चाहिए कि अपने बेटों और बेटियों के बिस्तर उनकी उम्र 10 साल होने पर अलग अलग कर दें ताकि घर के अंदर भी हया पैदा हो सके और खूनी रिश्तो का पास और लिहाज़ रखा जा सके।

अपनी औलाद को नसीहत:

वालिदैन को चाहिए कि अपने बेटे और बेटियों को वक़्त वक़्त पर नसीहत करते रहें खास तौर से अपनी बेटियों को पर्दे की तालीम ज़रूर देना चाहिए। बेटी को उसकी मां का किरदार ज़्यादा मुतास्सिर करता है मां जिस किरदार की हामिल होगी बेटी भी उसको देखकर ज़िंदगी गुज़ारेगी। इसलिए मां का बा किरदार होना बहुत ज़रूरी है।

घर में गैर महरम लड़कों का आना-जाना बिल्कुल बंद होना चाहिए याद रखें किसी लड़की के लिए उसके वालिदैन और उसके सगे भाई बहन के अलावा कोई दोस्त नहीं चाहे कोई कितना ही हमदर्द क्यों ना हो। इसलिए कभी बर्थडे पार्टी के नाम पर कभी और किसी बहाने दोस्तों का घर में आना जाना अख़लाकी ऐतबार से भी बुरा है और प्राइवेसी के ऐतबार से भी, और अब इसमें मुस्लिम और गैर मुस्लिम की तमीज़ भी खत्म हो चुकी है ज़रूरत की बिना पर घर के बाहर ही से किसी काम को अंजाम दिया जाए और किसी भी लड़की के वालिदैन और उसके भाई उसके कामों में मददगार बनें। आपकी लापरवाही



आपके लिए नुकसानदेह साबित हो सकती है इसलिए वालिदैन अपनी बेटियों के मददगार बनें और भाई अपनी बहनों के मददगार बनें और खुद भी बा हया मुआशरा तशकील देने में मदद करें और अपनी औलाद को नसीहत करते रहें।

फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर दोस्ती:

वालिदैन इस तरफ भी अपनी नज़र मरकूज़ करें अक्सर मां-बाप सोशल मीडिया से ना आशना है और उनकी औलाद घर में बैठकर ही बे हयाई करती रहती है और उन्हें इसका शऊर भी नहीं होता। आपकी बेटी कहां किससे बात कर रही है आप इसे बिल्कुल भूले बैठे हैं कभी क्लासमेट के नाम पर कभी कोचिंग फ्रेंड के नाम पर कभी नोट्स के बहाने कितनी लड़कियां किसी भी गैर महरम लड़के को अपना मोबाइल नंबर वगैरह दे देती हैं और उसमें बाज़ औकात गैर मुस्लिम लड़के भी होते हैं जिन से दोस्ती हो जाती है और माजरा बढ़ते बढ़ते फोटो शेयरिंग तक पहुंच जाता है इधर हया का जनाज़ा निकल रहा होता है उधर मां-बाप ग़फलत की चादर ताने सो रहे होते हैं।

इज़्ज़त ए नफ्स मजरूह हो रहा है और दय्यूसियत की चादर ताने लोग सो रहे हैं बे हयाई को मॉडर्निज्म का नाम देकर खुशी का इज़हार किया जा रहा है अल्लाह तआला इस कौम को हिदायत दे अल्लाह इसको आने वाले फितनों से आशना कर दे अल्लाह तआला इसको अपनी बहन बेटियों की हिफाज़त करने की तौफीक अता फरमाए।



औरत का पर्दा:

औरतों का आज कल का पर्दा ऐसा है कि उस पर्दे को भी एक पर्दे की ज़रूरत है असल में हम पर्दे का भी मकसद नहीं समझ पाए, पर्दे का मतलब यह नहीं कि एक काले चुस्त लिबास में अपने आप को लपेट लिया जाए और फिर अपने आप को बा हया समझा जाए, बल्कि पर्दे का मतलब है 'बदन को छुपाना' जिससे औरत के जिस्म की साख्त लोगों से पोशीदा रहे, लोगों को औरत का मोटापन दुबलापन पता ना चले चाहे छुपाने के लिए एक चादर ही क्यों ना हो जिससे जिस्म को सही तरीके से छुपाया जा सके। वो औरतें जो चुस्त और भड़कीले पर्दे ज़ेवतन करके अपने आप को बा हया और पर्दे वाली समझ रही हैं वो बहुत बड़ी गलतफहमी में हैं। ऐसा पर्दा करना बे हयाई को बढ़ावा देने के मुतरादिफ है और यह अमल भी बेहाई के गुनाह में दाखिल है।

एक कड़वी हकीकत:

आजकल के कुछ वाकियात से हम ने यह नतीजा निकाला कि अक्सर औरतें पर्दा इसलिए करती हैं ताकि उनके कपड़े जो के दिखाने के काबिल नहीं वो लोगों की निगाह से छुप सकें, हालांकि इसमें भी किसी की नियत दुरुस्त हो सकती है लेकिन क्या पर्दा करने का मकसद यही था? और जब वह खूबसूरत कपड़े ज़ेबतन करती हैं उस वक़्त उन्हें पर्दा करने की हाजत नहीं होती। मतलब यह हुआ कि पर्दा करने का जो मक़सद था वो फौत हो चुका यानी बदन को छुपाना अब मक़सद नहीं रहा। पर्दे का मक़सद अब यह रह गया कि कपड़े अगर



मैले कुचैले हैं तो पर्दा लगा लो और अगर कपड़े खूबसूरत हैं तो पर्दे की कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि पर्दा करने से कपड़ों की खूबसूरती भी तो लोगों से पोशीदा हो जाएगी और फिर लोग औरतों की तारीफ क्यों कर करेंगे यह सब कैफियात औरतों के ज़हनों में गर्दिश करती है। हालांकि औरत का ज़ेबो जीनत करना सिर्फ और सिर्फ उनके अपने शौहरों के लिए होना चाहिए।

बा हया मुआशरह कैसे बनाए?:

इस पर कुछ तरीका ए कार हम बयान करेंगे जोकि इस तरह है:

(1) वालिदैन अपने बच्चों की तरबियत दीनी माहौल में करें, शुरू से ही अख़लाके हस्ना का दर्स दिया जाए उसके लिए ये बात बे हद जरूरी है कि खुद वालिदैन भी बा किरदार हों अच्छे अख़लाक के हामिल हों क्योंकि बच्चा देखकर ज़्यादा सीखता है और वालिदैन का किरदार औलाद को मुतास्सिर करता है।

(2) मां की गोद औलाद के लिए पहली दर्सगाह है इसलिए मां को चाहिए अपनी औलाद को अच्छी बातें सिखाए फालतू बातों से गुरेज़ करें अक्सर लड़कियों के राह से भटकने की वजह उनकी मांए होती हैं।

(3) टीवी, ड्रामा, सीरियल्स बच्चों के लिए ज़हरे कातिल हैं इसमें बे हयाई के अलावा कोई तालीम नहीं दी जाती है। इसकी जगह पर बच्चों को इस्लामियत



से ताल्लुक मवाद देखने को दिया जा सकता है जिसमें दुआ, नमाज़, कलमा वगैरह की तालीम होती है।

(4) कुरआने मजीद और सीरत ए रसूल ﷺ को लाज़िमी पढ़ाया जाए।

(5) बच्चों को अगर मोबाइल दिया जाए तो उस मोबाइल में कुछ प्रोटेक्शन एप्स भी डाउनलोड कर दी जाएं जिससे वो बच्चा जिन्सी अनारकी से महफ़ूज़ रह सके। और वो यूट्यूब जो सिर्फ बच्चों के लिए खास तौर से तैयार किया गया है उसमें इंस्टॉल किया जाए।

(6) जब बच्चा 7 साल का हो जाए तो उसे नमाज़ का हुक्म दिया जाए और लड़कियों को नमाज़ के साथ-साथ हिजाब की आदत डलवाई जाए ताकि उनके ज़मीर में यह चीज़ अभी से शामिल हो जाए।

(7) जब बच्चा 10 साल का हो जाए तो उनके बिस्तर अलग कर दिए जाएं और उन्हें रिश्तो का लिहाज़ और महरम और गैर महरम में फर्क बताया जाए।

(8) 7 साल से 14 साल तक औलाद को गुलाम बनाकर रखा जाए उसमें उन्हें बक़दरे ज़रूरत सज़ा भी दी जा सकती है ताकि उन की तामीर अच्छे से हो सके।

(9) 14 साल से 21 साल तक उन्हें अपना दोस्त बनाया जाए ताकि वो अपनी परेशानियां किसी गैर के बजाए आपसे शेयर कर सकें। इस उम्र में लड़कों और लड़कियों का गलत राह इख्तियार करने का इमकान ज़्यादा होता है इसका



एक सबब वालिदैन का उनसे कमज़ोर ताल्लुक भी है। वालिदैन अपनी ज़िंदगी में मसरूफ रहते हैं औलाद की तरफ नज़र नहीं करते और इसका नतीजा शर्मनाक होता है इसलिए ज़रूरी है कि अपनी औलाद को अपना दोस्त बनाया जाए ताकि वह भटकने से बच सकें।

(10) अगर आप इस उम्र तक अच्छी तरबियत कर देते हैं तो इन्शा अल्लाह आप की औलाद ज़रूर बा ज़रूर हया का पैकर बन जाएगी। इसके बाद अपनी औलाद का निकाह करके अपने हुक़ूक को पूरा करें।

इन्शा अल्लाह इस तरीक़ा ए कार पर अमल करेंगे तो बा हया मुआशरा तशकील पाएगा और आगे आने वाली नस्लें भी बा हया रहेंगी। ज़रूरत है जिंदगी को तब्दील करने की और मगरिबी तहज़ीब का भूत सिर से उतार कर शरीयत ए इस्लामी के साये में जिंदगी बसर करने की।

अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को बा हया मुसलमान बनाएं अल्लाह तआला हमारा हामी और नासिर हो।

आमीन!



मौजूदा ज़माने में सीरते नब्वी ﷺ एक फलाही रास्ता

सिब्तैन रज़ा मिस्बाही

सीरते नब्वी ﷺ एक ऐसा मौज़ू है जो सदाबहार और तरोताज़ा है जिसकी हलावत और तरोताज़गी कभी कम नहीं, इस मौज़ू का मुतालेआ और इससे अमली बाबसत्गी उम्मते मुस्लिमा के लिए फलाह का रास्ता है, लुगवी तौर पर लफ्ज़े "सीरत" सारा यसीरू से लिया गया है जिसका मायना चलने के हैं इसी से "सीरत" है जिसका मायना तौर और तरीक़ है आमतौर पर सीरत से मुराद नबी करीम ﷺ की हयाते तैय्यबा के तमाम हालात और वाकियात, शमाइल और आदात, सुराया और ग़ज़बात, अक़्वाल और अफआल मुराद हैं।

मोहसिने इंसानियत हुज़ूरे अकरम ﷺ की हयाते तय्यबा खैरख्वाही, कामयाबी, फलाह की ज़ामिन है इरशादे बारी तआला है

"وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ"

यानी नबी करीम ﷺ की हयाते तय्यबा उम्मते मुस्लिमा के लिए बेहतरीन उसवा और नमूना है इस आयते मुबारका के ज़रिए तमाम इंसानों के हक़ में पैगाम ये है कि नबी करीम ﷺ की ज़ाते तय्यबा और सीरत क़ाबिले तक़लीद नमूना,



इंसान साज़ी और शख्सियत और किरदार की तशकील के लिए एक बेहतरीन रोल मॉडल है, कोशिश है सीरते नब्वी ﷺ की रोशनी में हुज़ूरे अकरम ﷺ की शख्सियत के गूनांगूं हैसियत को बयान करके उस से मिलने वाले इल्मी असबाक़ को पेश किया जाए मौजूदा हालात की तनाज़ुर में उम्मते मुस्लिमा के लिए सही रहनुमाई साबित हो।

गौर किया जाए तो सीरत ए नबवी उम्मते मुस्लिमा का कीमती सरमाया है साथ ही साथ एक दस्तूर ए हयात है एक ऐसी कामयाब तर्ज़े जिंदगी जिसके ज़रिए इंसान अपनी दुनिया और आखिरत दोनों संवार सकता है अपने नकल और हरकत, कल्ब और ज़मीर, नज़र और फिक्र, सूरत और किरदार की इसलाह कर सकता है इसी के ज़रिए कामयाबी का रास्ता ढूंढ सकता है मसलन ताजिर के लिए तिजारत का, क़ाइद के लिए क़यादत का, उस्ताद हो तो मुअल्लमी का, शौहर हो तो कामयाब शौहर का, मुरब्बी हो तो बेहतरीन तरबियत का, वालिद हो तो अच्छे वालिद का, हुक्मरान हो तो आदिल हुक्मरान का, गर्ज़ के ज़िंदगी के हर शोबे में हर इंसानी तबक़े के लिए रसूले अकरम ﷺ की ज़ात में नमूना है।

नबी ए करीम ﷺ बहैसियते ताजिर:

एक शख्स अगर ज़िंदगी में तिजारत के शोबे से जुड़ा हुआ है उसके लिए हुज़ूरे अकरम ﷺ की सीरत ए तय्यबा मुकम्मल नमूना ए अमल है जिसके ज़रिए कोई भी अपनी तिजारत एक कामयाब तिजारत बना सकता है। चुनांचे एलाने



नबुव्वत से पहले नबी करीम ﷺ बड़े अरसे तक तिजारत करते रहे, तारीख शाहिद है हुज़ूरे अकरम ﷺ से ज़्यादा कोई दयानतदार ताजिर ना था तिजारती सफरों में सच्चाई और ईमानदारी की वजह से इतने ज़्यादा मशहूर हो चुके थे कि अहले अरब सादिक और अमीन कहकर पुकारते। खुद हज़रते खदीजा रदिअल्लाहु अन्हा के गुलाम मैसरा ने नबी करीम ﷺ के हुसने मुआमलत और सदाकत और दयानत की चश्मदीद दास्तान सुनाई जिसका नतीजा हज़रत खदीजा रदिअल्लाहु अन्हा आपसे निकाह की ख्वाहिश मंद हुई।

फरमाने नबी ﷺ है:

"التاجر الصدوق الامين مع النبيين، والصديقين والشهداء"

सच्चा और अमानतदार ताजिर (क़यामत के दिन) अम्बिया, सिद्दिक़ीन और शोहदा के साथ होगा"।

ترمذی شریف، کتاب البیوع عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، باب مَا جَاءَ فِي التُّجَّارِ وَتَسْمِيَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِيَّاهُمْ، حدیث نمبر: 1209

सीरते नब्वी के तिजारती पहलू से एक ताजिर के लिए दर्स ये है अपने तिजारती मुआमलात में हमेशा सच्चाई और दयानतदारी को मलहूज़ रखें मज़कूरा हदीस में दो बातें अहम हैं एक ताजिर गुफ्तगू में सच्चा हो, दूसरा माल के मामले में ईमानदार हो। यानी बात तय करते वक़्त झूठ ना बोले और फरोख्त करते वक़्त माल में गड़बड़ ना करे यही दो बातें एक कामयाब तिजारत की बुनियाद हैं।



नबी करीम ﷺ बहैसियते वालिद:

बच्चों के वालिदैन की बड़ी तदाद इस बात की शदीद ख्वाहिश रखती है कि अपने वालिद के साथ ताल्लुकात और मुआमलात कैसे बेहतर हो? इंसानी ज़िंदगी के इस शोबे के लिए नबी ए करीम की सीरत ए तय्यबा बेहतरीन नमूना है। बहैसियते वालिद नबी ए करीम का अपने बेटों से मोहब्बत, अपनी बेटियों और बेटियों की औलाद से गैर मामूली प्यार, और अपने नवासों से आतिफत और उल्फत हद्द दर्जा थी।

चुनांचे हज़रत अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं

"ما رأيتُ أحدا كان أرحم بالعِيال من رسول الله صلى الله عليه وسلم»، قال: «كان إبراهيم مُسْتَرضَعًا له في عَوَالي المدينة، فكان ينطلق ونحن معه، فيدخل البيت وإنه ليُدَخَّن، وكان ظِئُره قَيْنًا، فيأخذه فيُقبِّله، ثم يرجع"

कि अपनी औलाद पर रसूल ﷺ से ज़्यादा किसी को शफीक़ न देखा और हज़रते इब्राहीम रदिअल्लाहु अनहु (हुज़ूर के बेटे) मदीने की बालाई बस्ती में दूध पीते थे आप वहाँ तशरीफ ले जाते और हम भी आप के साथ होते थे आप वहाँ इस हाल में तशरीफ ले जाते की वहाँ धुआं होता कि उस दाया का खाविंद लोहार था आप अपने बेटे को बोसा देते और फिर लौट आते

(सही मुस्लिम शरीफ, रक़म हदीस:5906)



पता चला हुज़ूर ﷺ अपने बेटों से शदीद मोहब्बत फरमाते थे। इतना ही नहीं नबी ए करीम ﷺ अपने बेटों से हुस्ने इस्तिकबाल करते और उनको करीब बिठाते। जैसा की हज़रते आयशा रदिअल्लाहु अन्हा बयान करती हैं

اجتمع نساء النبی صلی الله علیه و سلم فَلَمْ يُغَادِرْ مِنْهُنَّ امرأةٌ فَجاءت فَاطِمَةُ رضی الله عنها تَمْشِي كان مِشْيَتُهَا مِشْيَة رَسُولِ اللّٰهِ صلی الله علیه وسلم شَيْئًا۔ فَقَالَ: ''مَرْحبًا بِابْنَتِي۔'' ثُمَّ فأَجْلَسَهَا عَنْ يَمِيْنِهِ أَوْ عَنْ شِمَالِهِ

कि नबी ए करीम ﷺ की तमाम बीवियां जमा थीं और कोई बाक़ी नहीं थी इतने में हज़रते फातिमा रदिअल्लाहु अन्हा आईं जिनकी चाल रसूल अल्लाह ﷺ के चलने की मुशाबेह थी आप ने फरमाया: मरहबा (खुश आमदीद) मेरी बेटी! फिर उनको दाईं या बाईं जानिब बिठाया

(सही मुस्लिम शरीफ, रकम हदीस: 1015)

मालूम हुआ नबी ए करीम अपनी बेटियों से इंतिहाई मोहब्बत फरमाते थे।

नवासों से इतनी मोहब्बत और क़ल्बी लगाओ जब भी उनसे मिलने या मुलाकात के लिए जाते तो उनको बहुत प्यार देते उनके लिए दुआएं करते। हज़रते अबू हुरैरह रदिअल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि नबी करीम ने फरमाया:

"مَن أحبَّ الحسن والحُسين فقد أحبَّني"



के जो शख्स हसन और हुसैन से मोहब्बत रखता है वह मुझ से मोहब्बत रखता है।

(सुनन इब्ने माजा, जिल्द 1, रकम हदीस :143)

बहैसियते वालिद हुज़ूरे अकरम ﷺ की सीरते तय्यबा से वालिदैन के लिए दर्स है अपनी औलाद, बेटों, बेटियों और नवासों से हमेशा प्यार और मोहब्बत से पेश आएं और उनकी इज़्ज़ते नफ्स का ख्याल रखें।

नबी ए करीम ﷺ बहैसियते शौहर:

अपनी बीवी और औलाद के साथ मोहब्बत, नरमी का बरताव, वालिदैन की खिदमत और हुक़ूक की अदायगी करने को कामयाब शौहर से ताबीर किया जाता है। नबी ए करीम ﷺ इस ऐतबार से भी मिसाली हैं नबी ए करीम ﷺ की ज़िंदगी बहैसियते शौहर काबिले तक़लीद और रोल मॉडल है नबी ए करीम ﷺ की अज़्दवाजी ज़िंदगी इन्तेहाई शानदार थी। नबी ए करीम ﷺ अज़वाजे मुतह्हरात से हद्द दर्जा मोहब्बत फरमाते उनके साथ नरमी का बर्ताव करते उनकी दिलजोई और खुश तबई फरमाते उनके साथ घर के कामकाज में हाथ बटाते।

आए दिन मर्द हज़रात अपनी बीवी पर आम सी बात पर हाथ उठा देते हैं बीवी से गलती कभी सरज़द हो जाने पर बीवी को मारते हैं पीटते हैं मगर नबी ए करीम ﷺ की अज़्दवाजी जिंदगी ऐसी लोगों के लिए नमूना ए अमल है नबी



करीम ﷺ कसीर उल ज़ौजात थे मगर पूरी ज़िंदगी में कभी किसी पर हाथ उठाने की ज़रूरत तो दूर नौबत भी ना पेश आई। चुनांचे हज़रते आयशा रदिअल्लाहु अनहा बयान करती हैं

"ما ضَرَبَ رَسولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عليه وسلَّمَ شيئًا قَطُّ بيَدِهِ، وَلَا امْرَأَةً، وَلَا خَادِمًا"*

कि रसूल अल्लाह ﷺ ने कभी अपने हाथ से किसी को न मारा, न किसी औरत को, न किसी खादिम को

[सही मुस्लिम शरीफ़, रकम हदीस: 5929]

हुज़ूरे अकरम ﷺ अपनी बीवियों से किस तरह मोहब्बत फरमाते कि हज़रत अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु अनहू ने बयान किया कि मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को यह कहते हुए सुना;

"فضل عائشة على النساء كفضل الثريد على سائر الطعام"

कि हज़रते आयशा रदिअल्लाहु अन्हा की फज़ीलत औरतों पर इस तरह है जिस तरह तमाम खानों से सरीद अफजल है।

(सही बुखारी शरीफ, रकम हदीस: 3770)

ये है अपनी बीवी से मोहब्बत।

आए दिन तलाक की तादाद में बेतहाशा इज़ाफ़ा हो रहा है जिसकी बुनियादी वजह अपनी बीवी को मारना, पीटना और काबू से बाहर होकर तलाक देना है,



मगर नबी ए अकरम ﷺ की अज़्दबाजी ज़िंदगी में कहीं यह नहीं मिलता कि किसी झगड़े की बिना पर किसी बीवी को तलाक दी हो। एक और बात जो मुआशरे में राइज हैं कि घर के कामकाज की ज़िम्मेदारी बीवी की है जबकि ऐसा हरगिज़ नहीं बहैसियते शौहर नबी ए अकरम ﷺ घर का काम खुद करते थे अपने कपड़ों पर खुद पैबंद लगाते और घर के कामकाज में हाथ बटाते जैसा कि हदीसे पाक है

"كان يكون في مهنة أهله"تعنى فى خدمة أهله"

कि हुज़ूरे अकरम ﷺ अपने घर के काम काज में हाथ बटाते।

(सही बुखारी शरीफ, रुक़्म हदीस: 676, जिल्द: 1)

बहैसियते शौहर अगर रसूल अल्लाह ﷺ की अज़्दवाजी ज़िन्दगी को मशअले राह बनाया जाए तो एक मर्द कामयाब शौहर बन सकता है कि वो बीवी के हवाले से अल्लाह तआला के वाजिब करदा अहकाम को पूरा करने वाला हो, अपनी बीवी से मोहब्बत करने वाला हो, उसकी ज़रूरियाते ज़िन्दगी को पूरा करने वाला हो, घर के काम काज में हाथ बटाने वाला हो, बीवी से गलती हो जाए तो माफ़ करने वाला हो।

नबी ए करीम ﷺ बहैसियते मुरब्बी:

हुज़ूर ﷺ की सीरते तय्यबा हमा जहत पहलुओं को शामिल है इसी तरह नबी ए करीम ﷺ की ज़िन्दगी बहैसियते मुरब्बी नमूना ए अमल है नबी ए करीम ﷺ



की तरबियत का ही नतीजा है कि रेगज़ारे अरब में इंकलाब बरपा हुआ और आपके सहाबा सिद्क़ व सफ़ा, जूदो-सखा के मनाज़िल पर फाइज़ हुए जिसकी शुरुआत दारे अरक़म में की गई थी नेज़ हर पैग़म्बर की ज़िम्मेदारी अपनी उम्मत की इस्लाह और तरबियत थी अलबत्ता तरीका ए तरबियत अलग थी जैसे हज़रते इब्राहीम عليه السلام ने रूह की तज़किया और तरबियत के लिए अमलन दर्से तौहीद दिया, हज़रते ईसा عليه السلام ने मुख्तलिफ अमराज़े इंसानी का इलाज करके अपने मानने वालों की इस्लाह फरमाई।

नबी ए करीम ﷺ की तरबियत कुरआन में कुछ इस तरह है:

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَکِّیۡهِمۡ وَ یُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَ الۡحِکۡمَۃَ٭ وَ اِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ

कि वही अल्लाह है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि उन पर उस कुरआन की आयतें पढ़ते हैं और उन्हें पाक करते हैं और उन्हें किताब और हिकमत का इल्म अता फरमाते हैं और बेशक वो इस से पहले ज़रूर खुली गुमराही में थे।

मजकूरा आयत में चार ऐसी बातें हैं जिसका ताल्लुक तरबियत और तज़किए से है पहली बात नबी ए करीम ﷺ कुरआन की आयतों की तिलावत करते हैं दूसरी बात उन्हीं आयात से कुलूब और अज़हान का तज़किया और तस्फिया फरमाते हैं तीसरे बात कुरआन की तालीम देते हैं और चौथी बात हिकमत की



बातें करते हैं। तो तरीका ए फर्द की तरबियत ये है कि भटके हुए लोगों को कुरआन की आयत (जिस में खुदा का हुक्म है) पढ़कर सुनाना है फिर इस्लाहे क़ल्ब करके हिकमत के ज़रिए तलाशे हक़ का शौक पैदा करना है। यह चारों बातें एक मुरब्बी के लिए बहुत अहम है, एक मुरब्बी तरबियत की इब्तिदा इसी तरिका ए कार से करे मिसालों से इस तरह समझा जा सकता है कि अगर कोई शराब का आदी है या नमाज़ का पाबंद नहीं उसको बयक वक़्त शराब की हुरमत या नमाज़ न पढ़ने पर अज़ाबों का तज़किरा न किया जाए बल्कि पहले शराब पीने के नुकसानात बताए जाएं ताकि सही और गलत में फर्क हो जाए फिर इस्लाम का क्या हुक्म है शराब पीने पर वो ज़िक्र किया जाए आखिर में हिकमत के साथ शराब की हुरमत नुसूस का तज़किरा करे

यही तरीका ए कार नमाज़ के पाबंद न होने पर अपनाया जाए इसी तरिका ए कार के ज़रिए नबी ए करीम ﷺ ने ऐलाने नबुव्वत के शुरुआती दिनों में अपने सहाबा की तरबियत फरमाई और इस्लाम का बोल बाला हुआ पता चला नबी ए करीम ﷺ की ज़ात में एक कामिल मुरब्बी का नमूना है।

खुलासा ए कलाम ये है कि नबी ए करीम ﷺ की सीरते तय्यबा तमाम ज़िंदगी के शोबों से ताल्लुक रखने वालों के लिए मशअले राह है इंसानी ज़िंदगी का कोई ऐसा शोबा नहीं जिसके बारे में आप की सीरते तय्यबा से रहनुमाई न मिलती हो। हुज़ूरे अकरम की सीरत पूरी कायनात में आइडियल की हैसियत रखती है ज़रूरत है तो बस अमली मैदान में आने की।



मौजूदा वक़्त में मुसलमानों की ख़ामोशी मुस्तक़बिल के लिए नुकसानदेह

✍ जावेद रज़ा मरकज़ी

वो भी चुप हैं तो मैं भी चुप हूं।

हमारे मुआशरे में पुर असरार खामोशी आने वाली नस्लों के लिए एक ऐसी खामोशी है जो किसी बड़े तूफान की आमद से पहले होती है एक तवील अरसे से तवका ए खास को निशाना बनाया जा रहा है कभी कोई कानून बनता है जो नौजवानों की ज़िंदगियां बर्बाद कर देता है हर पार्टी जो इक़तिदार में आती है तो कुछ ना कुछ नया कारनामा अंजाम देती है मगर इसकी मुखालिफ में बैठी पार्टी बस रस्मी तौर पर बयान दर्ज करा कर अपना फ़र्ज़ पूरा कर देती है मगर मुस्तकिल तौर पर आवाज उठाने वाले मफकूद नज़र आते हैं बल्कि हाल तो यह है कि जो कौम के नाम पर ही अपने आप को चमकाते हैं उनकी आवाजें भी कान सुनने को तरसते ही रहते हैं।

क्या अपोज़ीशन?

क्या मीडिया?

क्या इदारे?



क्या अदलिया?

और क्या इंसानी हुक़ूक की मुहाफिज़ तंज़ीमें?

सबकी कार गुज़ारियों पर सवालिया निशान लगा हुआ है! सब एक ही राह पर गामज़न हैं हर एक माल और इक़तिदार की तलबगार हैं।

कौन आवाज़ उठाए?

कौन लोगों को ज़ुल्म के खिलाफ मुनज़्ज़म करे?

कौन ज़ालिमाना कार्रवाईयों के खिलाफ सीना सिपर हो?

गैरों का क्या रोना अपनों में भी ये हाल है कि जो मुआशरे की ज़ुबान हो सकते हैं वो भी मस्लेहत के शिकार नज़र आते हैं पहले तो बहुत सारे काम पर्दे के पीछे होते थे मगर अब तो हद हो गई हर चीज़ खुलेआम हो रही है दीनी शिआर पर पाबंदी आइद करने की बात हो या मुसलमान के कत्लेआम की बात हो, मुस्लिम ख्वातीन की इसमतदरी जैसी इंसानी सोच से गिरी बातें सब बरसरेआम हो रही हैं ये बात किसी से पोशीदा नहीं कि ज़माना ए क़रीब में मुनज़्ज़म तौर पर न जाने कितने मुसलमानों को सरे राह क़त्ल कर दिया गया मगर हुआ क्या? जो क़त्ल हुआ वही मुजरिम ठहरा इसलिए कि साहिबे इक़तिदार हमा वक़्त उनकी मदद को तैयार और उन मुजरिमों की मदद अपना फर्ज़े मन्सबी समझते हैं इसलिए कहीं उनका हार फूलों से इस्तिकबाल होता है तो कहीं कोई मनसब दे कर हौसला अफज़ाई की जाती है।



खुलेआम मुसलमानों का नरसिंहार करने के लिए मजलिसे मुनअक़िद की जा रही हैं लोगों से अहद और पैमान लिए जा रहे हैं ये सब सामने हो रहा है मगर अफसोस सब खामोश हैं न कोई हरकत, न कोई बात, बस देख कर सब खामोश हैं आखिर किस चीज का इंतज़ार है? वो कौन सी मदद है जो आने वाली है?

डॉक्टर इकबाल ने किया खूब कहा:

हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िर ए फिरदा हो

याद रखें जो कौम ज़ालिम के ज़ुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाती है आने वाली नस्लें ज़ुल्म से निजात पाती हैं।

जब गुलामी के खिलाफ आवाज़ें बुलंद होती हैं तो आने वाली नस्लें आज़ादी की फिज़ा में सांस ले पाती हैं, हिन्दुस्तान की तारीख इस बात की शाहिद है। जब काले लोगों के खिलाफ लोगों की ज़ुल्म व ज़्यादती बढ़ी तो उन लोगों ने अपने हुक़ूक के लिए आवाज़ें बुलंद कीं नतीजतन उनको उनके हुक़ूक मिले।

आज हर मैदान में मुसलमानों के खिलाफ साज़िशों का दौर दौरा है मगर हम ख़्वाबे गफलत में हैं वो मैदाने सियासत हो या मैदाने तालीम, चाहे कारोबारी मैदान हो

गोया मुसलमानों को हर उस क्षेत्र में मफलूज करने की कोशिश की जा रही है जो ज़िंदगी के लिए ज़रूरी है और सब से अहम के लोगों को मुर्तद बनाने के



लिए नित नए हथकंडे अपनाए जा रहे हैं लोगों को इस्लाम से मुनहरिफ करने के लिए कुछ भी कर गुज़रने को तैयार हैं।

हम कह सकते हैं कि अगर यही सब चलता रहा और हम खामोश तमाशाई बने रहे तो आने वाली नस्लों के लिए हालात बद से बदतर होंगे।

ज़माना ए करीब में देखा जाए तो कितनी मुस्लिम ख्वातीन गैरों के दामे फरेब में आकर अपनी इज़्ज़त, ज़िंदगी और ईमान से हाथ धो बैठीं हमारे पास कोई ऐसा मंसूबा नहीं कि हम इसका मुकाबला कर सकें।

कौम के बाअसर और मुंसिफ मिजाज़ लोगों को आगे आकर बोलना पड़ेगा जो कौम खामोशी इख्तियार कर लेती है उस पर ज़ुल्म पर ज़ुल्म ही होता है।

करने के कुछ अहम काम:

हमारे मुआशरे के लिए अशद ज़रूरी हैं कि वक्त रहते कोशिश की जाए तो हमारे लिए और आने वाली नस्लों को बड़ी आफतों से बचाया जा सकता है।

बे फायदा बयानात के खिलाफ बोलना ज़रूरी है। जिससे कौम का फायदा नहीं बल्कि नुकसान ही होता है बयान देने वाले बयान देकर गायब हो जाते हैं और ख़ामियाज़ा कौम को भुगतना पड़ता है।



तालीमी निज़ाम:

आज तालीम के नाम पर वो सब करवाया जा रहा है जिसकी इस्लाम क़तअन इजाज़त नहीं देता मगर सब खामोश हैं कोई बोलने को तैयार नहीं तालीम के नाम पर नाच गाने की महफिले मुसलमानों के स्कूलों में भी आम बात है मगर कौन रोके कौन बोले?

इसकी रोकथाम के लिए ज़रूरी है कि हर गांव, हर कस्बा, हर शहर में इस तरह के इदारे बनाए जाएं जहां दुनियावी तालीम के साथ बच्चों को दीनी तालीम से भी आरास्ता किया जाए।

आज दहेज और फिज़ूलखर्ची ने आम आदमी की कमर तोड़ कर रख दी है मगर कोई बोलने को तैयार नहीं बस रसमी तौर पर तकरीरें हो जाती है इसके खिलाफ अगर मुनज़्ज़म तौर पर कोई कदम नहीं उठाया तो इसका जो असर मुस्लिम मुआशरे पर हो रहा है किसी से ढका छुपा नहीं है हर फर्द देख रहा है नौजवानों को बुराइयों के गढ़े में धकेलने का एक बड़ा सबब शादियों में बड़े इखराजात भी हैं।तालीम पर इसका ऐसा असर हुआ कि नौजवानों की एक बड़ी जमाअत तालीम से महरूम हो गई मगर हम चुप हैं।

ना जाने कितनों की ज़मीनें इसी दहेज की नज़र हो गईं और ना जाने कितने सूदी कर्जों में दबकर रह गए। मगर हम सब इसको देख कर बस खामोश तमाशाई बने हुए हैं।



सियासी तौर पर देखा जाए तो हम इतने मुन्तशिर हैं कि हमारी वुक़अत दिन ब दिन घटती जा रही है और इस सब का ज़िम्मेदार खासकर वो तबका है जो हमारे ही दरमियान रहकर हमारे वोटों के ज़रिए से अपनी तिजोरियां भर रहा है। हर गली मोहल्ले में नेताओं की भरमार है।

मगर अक्सरियत लीडरों की नहीं बल्कि डीलरों की है।

इनसे कौम को बचाना भी मुख्लिसीन की अहम ज़िम्मेदारी है। यह कौम के सौदागर कौम के टुकड़े-टुकड़े करके आने वाली नस्लों को अंधेरे मुस्तकबिल में धकेल रहे हैं।

काश ऐसा हो कि हमारे कायदीन कोई मज़बूत लाहे अमल तैयार करें ताकि कौम का भला हो सके।

अल हासिल, वक्त की अहम ज़रूरत है कि कौम के बिखरे शीराज़े को यक्जा करके आने वाली नस्लों की खातिर एक आवाज़ हुआ जाए।



तालिमाते औलिया ए किराम

✍ मुहम्मद आदिल रज़ा मातुरीदी

औलिया की तालिमात से हमें भाईचारगी, मेल और मोहब्बत, अमन और सुकून, का दर्स मिलता है। औलिया ए किराम की तालिमात और सीरत और किरदार और अख़्लाक़ और गुफ़्तार हमारे लिए मशअले राह हैं। औलिया ए किराम की किताबें हमारे लिए रुश्दो हिदायत का चिराग हैं लेकिन अफसोस उनका मुतालेआ न करने और बरवक़्त तबाअत न होने की वजह से महरूमी है। और उनके आसताने भी हमारे लिए रुश्द और हिदायत का चिराग हैं लेकिन अफसोस उनके आसतानों को तिजारत का अड्डा बना रखा है और खिलाफे शरा काम हो रहे हैं जिनसे बचना और बचाना ज़रूरी है। और औलिया ए किराम लोगों के दिल और बतिन को पाक करते हैं। शरियते इस्लामिया पर चलने की तरफ बुलाते हैं। हमारी सोचें आखिरत की तरफ नहीं हैं बल्कि हम दुनिया की तरफ और दुनिया कमाने में माइल हैं। जबकि अल्लाह के वली मुत्तक़ी परहेज़गार और तक़वे वाले होते हैं और हर वली आलिम ज़रूर होता है। यह नुफूसे कुद्दसिया गुनाहों से बचने और नेकियां करने की दौलत देते हैं। इल्म हासिल करने की तरफ रगबत करते हैं ताकि हमें सही और गलत की मालूमात हासिल हो जाए। हमारे पास शरियत का मियार है जिसके ज़रिए हम अल्लाह



के नेक बन्दों और औलिया ए किराम की पहचान कर सकते हैं। बनावटी ढोंगी लोगों को बआसानी पहचान सकते हैं। औलिया ए किराम ने दीने इस्लाम की तबलीग से लाखों गैर मुस्लिमों को मुसलमान किया और उन्हें दीने इस्लाम की तालिमात से रोशनास कराया। और ये शरीयते मुताहरा के पाबंद और उस पर कारबंद रहते हैं। और यही उनका मक़सद होता है। औलिया ए किबार और सिगार सबका यही मक़सद होता है के अल्लाह तआला राज़ी हो जाए। और दीने मुस्तफा ﷺ की नश्र और इशाअत करना मकसद होता है।



यूट्यूब की कमाई का शरई हुक्म

✍ तज़्कीर अत्तारी

दौरे हाज़िर में जिस तरह हर चीज़ में तरक्की नज़र आती है इसी तरह इंटरनेट की दुनिया ने भी बहुत उरूज पा लिया है। यूट्यूब दुनिया का सबसे बड़ा सोशल मीडिया प्लेटफार्म और अगर कहा जाए दुनिया की सबसे ज़्यादा डाउनलोडिड एप्लीकेशन (downloaded Application) जिसे 10 बिलियन से ज़ाइद डाउनलोड्स हैं पर ये सवाल पैदा होता है कि आखिर यूट्यूब ही क्यों? दरअसल यूट्यूब एक ऐसा प्लेटफार्म है जो आपकी यूट्यूब चैनल मोनेटाइज़ (Monitize) करने पर पैसे देती है वो क्यों? और क्या यह पैसा हलाल है या हराम? चलिए देखते हैं

पहली चीज़ तो ये है कि आप अपलोड करते क्या हैं? मतलब जो आपका कंटेंट(content) है क्या उसमें कोई गैर शरई चीज़ तो नहीं है। जैसे बेपर्दगी, म्यूज़िक, झूठ वगैरह-वगैरह।

फिर आता है यूट्यूब से पैसे कमाना जो के उलमा ए अहले सुन्नत के नज़दीक बिल्कुल ना जायज़ व हराम है क्योंकि यूट्यूब आपको इस चीज़ के पैसे दे रहा होता है कि वह तुम्हारे चैनल पर ऐड(Advertisement) लगाए। उसमें गाने, बेपर्दा औरतें वगैरह होती हैं जो के शरीयत ए मुताहरा के खिलाफ है। चाहे



कितना ही दीन का काम क्यों ना कर रहे हो आप पैसे लेकर उसके ज़रिए से गुनाहों का वसीला बन रहे होते हैं।

अपाहिज लोमड़ी:

एक बुज़ुर्ग का बयान है कि वह दिल में रोज़ी तलब करने का इरादा करके घर से निकले और एक जंगल में गुज़रे एक मक़ाम पर बयाबान में क्या देखते हैं कि एक लोमड़ी निहायत मोटी और तरोताज़ा बैठी होती है जिसके ना हाथ है ना पांव और आंखों से भी अंधी है। वह बुज़ुर्ग ऐसे बे दस्तो-पा और मजबूर जानवर को इस कदर तरोताज़ा देखकर निहायत हैरान हुए और वहां बैठकर हैरत से सोचने लगे और अपने दिल में कहा कि ऐ अल्लाह! यह अपाहिज लोमड़ी किस हीले से अपना रिज़्क पाती है? हालांकि बज़ाहिर कोई ज़रिया रोज़ी हासिल करने का इसके पास मौजूद भी तो नहीं, ना यह चल सकती है, ना देख सकती है। वो बुज़ुर्ग इस किस्म की बातें अपने दिल में सोच ही रहे थे कि इतने में एक जगह से जमीन शक़ हुई और दो प्याले बरामद हुए एक दूध से भरा हुआ था और दूसरा शहद से। उन बुज़ुर्ग ने अब दिल में यह ख़्याल किया कि ऐ अल्लाह! इस गिज़ा तक खाने के लिए यह लोमड़ी किस तरह पहुंचेगी? अचानक क्या देखते हैं कि उसी मक़ाम पर पहाड़ से एक बुज़ुर्ग निहायत खूबसूरत और नूरानी चेहरे वाले नीचे तशरीफ लाए और उन दोनों प्यालो को उठाकर लोमड़ी के पास ले गए और दोनों प्याले उसको पिला दिए। जब वह नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग वापस पहाड़ की तरफ जाने लगे तो उन बुज़ुर्ग ने



बढ़कर नूरानी चेहरे वाले का दामन थाम लिया और पूछा, आप कौन हैं? उन्होंने फरमाया, मैं अल्लाह! के फरिश्तों में से एक फरिश्ता हूं और यही खिदमत मेरे सुपुर्द है कि हर रोज़ सुबह और शाम यहां आऊं और इस लोमड़ी को पेट भर कर गिज़ा खिलाऊं। यह वाकिया देखकर उन बुज़ुर्ग ने रोज़ी तलब करने की तकलीफ के ख्याल को दिल से निकाल दिया। और उसी पहाड़ पर बैठ गए और एक चश्मे के किनारे रहने लगे। और नमाज़ रोज़े में मशगूल हो गए। सात दिन गुज़र गए। मगर गैब से कोई रिज़क न पहुंचा। फ़ाक़ो के सबब निहायत कमज़ोर और निढाल हो गए। आखिरकार अल्लाह की बारगाह में दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! अपनी रहमत से मुझको कोई लुक़मा ए गिज़ा इनायत फरमा मुझ में अब भूख बर्दाश्त करने की ताकत नहीं या मेरी रूह को कब्ज कर ले! अल्लाह की तरफ से जवाब मिला, ऐ शख़्स! तू अपने हाथ पांव को हरकत दे और रोज़ी तलब कर, मैं तुझे तेरा रिज़्क अता करूंगा। खुद भी खा और मोहताजों को भी खिला। और अगर इस हालत में इसी पहाड़ पर 70 बरस तक बैठा रहेगा। तो मैं तुझको गिज़ा का एक दाना भी ना दूंगा। उस वक़्त बुज़ुर्ग की आंखें खुली और पहाड़ से उतर कर तलाशे मुआश में मशगूल हो गए और जो कुछ कमाते आधा खुद खाते और आधा मोहताजों को खिला देते।

(तज़किरातुल वा'एज़ीन)

इस वाकिये से यह समझ आया कि तवक्कुल फक़त इस बात का नाम नहीं है कि अपने घर बैठे रहें और रिज़्क का इंतज़ार करते रहें। यह दुनिया आलिमे



असबाब है। इसमें कुछ ना कुछ कोशिश करते रहना चाहिए और असबाब का सहारा भी लेना चाहिए।

इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान और हाकिम अबू हुरैरह रदिअल्लाहु तआला अन्हु से रावी के हुज़ूर ﷺ ने फरमाया: "जिसने हराम माल जमा किया फिर उसे सदका किया तो उसमें से उसके लिए कुछ सवाब नहीं, बल्कि गुनाह है।"

الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان, كتاب الزكاة، باب التطوع، الحديث : ٣٣٥٦ ، ج ٥ ، ص ١٥١۔

हमें इस बात को भी समझना चाहिए कि जो आप के नसीब में लिखा है वही मिलेगा। आप अगर कहेंगे कि मैं अगर हराम ज़रिया इख्तियार करूंगा तो इतने पैसे मिलेंगे और अगर हलाल ज़रिया इख्तियार करूंगा तो कम मिलेंगे, ऐसा कुछ भी नहीं हैं। इसका हम पर ही दारोमदार है कि हम कौन सा ज़रिया इख्तियार करेंगे?

इतना ही नहीं बल्कि यह लोग फिर दूसरों को भी इस चीज़ की तरगीब दे रहे होते हैं कि आप भी चैनल मोनेटाइज़ करें और अलल ऐलान सक्सेस स्टोरी(success story) के नाम पर अपनी हराम कमाई की दास्तानें सुना रहे होते है।

इमाम अहमद अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदिअल्लाहु तआला अन्हु से रावी, रसूल अल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो बंदा माले हराम हासिल करता है, अगर उसको सदका करे तो मकबूल नहीं और खर्च करे तो उसके लिए उस में बरकत



नहीं और अपने बाद छोड़ मरे तो जहन्नम को जाने का सामान है (यानी माल की तीन हालतें हैं और हराम माल की तीनों हालतें खराब) अल्लाह तआला बुराई से बुराई को नहीं मिटाता, हां नेकी से बुराई को मिटा देता है बेशक खब्बीस को खब्बीस नहीं मिटाता"

''المسند'' للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٦٧٢، ج ٢، ص ٣٣۔

अल्लाह तआला हमें माले हराम से बचने और माले हलाल हासिल करने की तौफीक अता फरमाए।

आमीन।



अइम्मा हज़रात और मुआशी बहरान से निजात की तदाबीर

✍ नाज़िश मदनी मुरादाबादी

इमामे मस्जिद, इलाके मोहल्ले का क़ाइद और रहनुमा होता है मोहल्ले में दीनी उमूर को सरअंजाम देने की मुकम्मल ज़िम्मेदारी उसी के कांधों पर होती है किसी की फौतगी पर मरने से चेहल्लुम और बरसी तक ईसाले सबाब की तमाम महफ़िलें और घर घर जाकर जुमेरात,जुमा, शबे बराअत, मुहर्रम शरीफ, ग्यारहवीं, बारहवीं, वगैरह फ़ातिहा पढ़ने की ज़िम्मेदारी उसी के सर होती हैं मगर अफसोस आज अइम्मा ए मसाजिद के साथ जो नारवा सुलूक किया जा रहा है वह किसी से मख्फी और पोशीदा नहीं है मुआशी लिहाज़ से उन पर जो मज़ालिम ढाए जा रहे हैं वह कौन नहीं जानता, आज मुआशरे में रहने वाले एक मज़दूर इमामों से ज्यादा कमा लेता है, मगर अफसोस हम इतने गए गुज़रे लोग हैं कि हमारा इमाम जो कि कौम का लीडर और पेशवा है उसकी तनख्वाह मज़दूरों से भी कम है और हम उसकी तनख्वाह में कोई इज़ाफ़ा नहीं कर पा रहे। सोचने वाली बात तो यह है कि इस महंगाई के दौर में हर चीज़ की कीमत बढ़ चुकी है मगर इमामों की तनख्वाह वही छः सात हज़ार है।



कौम से पूछना चाहुंगा कि इन दीनी पेशवाओं ने तुम्हारे साथ क्या बुरा किया है कि इनके साथ तुम्हारा यह नारवा सुलूक है? क्या उनके बाल बच्चे, फैमिली नहीं? क्या इनको दवा पानी की ज़रूरत पेश नहीं आती? क्या शादी वियाह और त्यौहार के मौके पर वह नए कपड़े पहनने के हकदार नहीं, क्या दीन के रहबरों के साथ यही सुलूक किया जाता है। अफसोस तो इस बात पर है कि अगर कोई इमाम साहब अपनी तनख्वाह बढ़ाने की बात करें तो उनको यह कहा जाता है कि आपको इतनी तनख्वाह पर रहना है तो रहें वरना दूसरे और बहुत हैं आखिरकार वह बेचारा मजबूरन उसी क़लील तनख्वाह पर राज़ी हो जाता है। और साथ ही अलग से तावीज़ गंडे का कारोबार शुरू कर देता है आखिर किसने उसको इस काम पर मजबूर किया और कौन इसका ज़िम्मेदार है।

गुज़िश्ता दिनों फकीर एक शादी की तक़रीब में गया तो जैसे ही शादी हाल से बाहर निकला तो एक मौलाना साहब से मुलाकात हुई खैरियत मालूम हो करने के बाद मसरूफियात के बारे में पूछा तो फरमाने लगे, हज़रत मैं कई साल इमामत और खिताबत के फराइज़ अंजाम दे चुका हूं मुतावल्लियों और ट्रस्टियों की बदसुलूकी और बद किरदारी ने मुझे मजबूर कर दिया और मुआशी लिहाज़ से भी कोई ख़ास मजबूती ना हासिल हो सकी बिलआखिर अब मैं फैसला करके घर ही एक छोटी सी किराने की दुकान खोल लिया हूं और अलहम्दुलिल्लाह अब इमामत से ज़्यादा मैं घर बैठे ही कमा लेता हूं, और सुखी हूं ना किसी का दबाव है ना किसी का जब्र।



कारेईन किराम! यह एक वाक्या नहीं इस किस्म की सैकड़ों सरगुज़िश्त और आपबीती है जिन सब का खुलासा यही है कि कौम ने अइम्मा ए किराम को फरामोश कर दिया, नतीजतन अइम्मा हज़रात ने इस मैदान ही को खैराबाद कह दिया और दीगर जाइज़ कारोबार में लग गए।

ज़रूरत इस बात की है कि मुआशरे में बढ़ते हुए इस सैलाब का बंद बांधा जाए और अइम्मा ए किराम को मुआशी बहरान से निजात दिलाई जाए और कोई लाहे अमल तय किया जाए ताकि यह तबका कुशादा कल्बी और इत्मिनान के साथ अपनी मुआशी जिंदगी को बेहतर बना सकें। वरना रुसवाई के दिन दूर नहीं है। तारीख गवाह है कि वह कौम जल्द ही हलाकत के दहाने पर पहुंच गई है जिसने अपने मुकतदा और पेशवा की कदर नहीं की। इस सिलसिले में चंद तजाबीज़ और तदाबीर पेश की जाती हैं उम्मीद है उन पर अमल दरामद हो गया तो काफी हद तक अइम्मा हज़रात को मुआशी बहरान से निजात मिल सकती है।

मस्जिद के लिए चंदा फंडिंग की जाए:

इसका बेहतरीन तरीका यह है मस्जिद के मुतावल्ली और ट्रस्टी हज़रात एक कमेटी तशकील दें और उसके कुछ मेंबर बनाए जाएं जो इस काम के लिए खास कर लिए जाएं और वह हज़रात हर महीने या इससे कम या ज़्यादा दिनों में चंदा करने के लिए निकलें और घरों में जा जाकर दस्तक दें और मस्जिद और मदरसे के लिए चंदा जमा करें। उम्मीदे क़वी है इस तरह एक बड़ी रकम



जमा हो जाएगी। फिर महीने के आखिर में इस जमा की हुई रकम से इमाम साहब के लिए एक हिस्सा निकाला जाए और हर महीने कमेटी वाले इस रकम को इमाम साहब की खिदमत में बतौरे तनख्वाह पेश करें।

जुमे के दिन जमा शुदा पूंजी अइम्मा ए किराम को पेश की जाए:

जुमे के दिन मसाजिद में झोली के ज़रिए जो रकम जमा की जाती है उमूमन मस्जिद की मरम्मत में उसकी कम ही ज़रूरत पेश आती है, मस्जिद के मुतावल्ली अगर आदिल और खौफ ए खुदा रखने वाले हुए तो जमा हो गई वरना वह भी हज़म, लिहाज़ा इस तमाम रकम को इधर उधर ना कर के इमाम साहब की खिदमत में पेश किया जाए ताकि उनका भला हो।

अहले खैर हज़रात इमाम साहब को नज़राना पेश करें:

वो लोग जो माली लिहाज़ से मज़बूत हैं वह इमाम साहब को हदिया और तोहफे में मुसल्ला, तसबीह, चादर, शा ॅल और मिठाई पेश करने की बजाय पैसों का नज़राना पेश करें।

खुशी के मौके पर अइम्मा ए किराम को याद रखा जाए:

मुक़तदी हज़रात मंगनी,शादी,बियाह,वलीमा, खतना और दीगर खुशी के मौके पर अपने मोहल्ले के इमाम साहब को हरगिज़ फरामोश ना करें और इन हसीन मौकों पर उनको बड़ी रकम तोहफतन पेश करें।



रस्मी जलसों जुलूसों को कम करके अइम्मा ए किराम की खिदमत की जाए

दौरे हाज़िर का एक बड़ा अलमिया यह भी है कि पहले तो लोग दीन के कामों की तरफ आते नहीं अगर आ भी जाएं तो बस जलसे जुलूस करने को अपनी कामयाबी समझ लेते हैं जलसे और कान्फ्रेंस भी देर रात तक करते हैं और बुलाए हुए पेशावर मुकर्रिर, खतीबों और रंगीले नातख्वानों को बीस बीस, चालीस चालिस हज़ार की भारी रकम पेश करते हैं। अफसोस कौम का कितना बड़ा ज़ुल्म है कि वो इमाम जो हमा वक्त मस्जिद में ड्यूटी करता है आपके बच्चों को सुबह और शाम मकतब में तालीम देता है वह उन तमाम नज़रानों से महरूम और वो पेशावर खतीब और नातख्वान जिसने बस एक डेढ़ घंटे तकरीर की या नात पढ़ी वह कुछ ही घंटों में जेबों की जेब भर कर ले जाता है अफसोस सद अफसोस।

वाए नाकामी मताए कारवां जाता रहा

करवां के दिल से एहसासे ज़ियां जाता रहा

क्या ही अच्छा होता कि वो रकम जो आपने नोट खोर मुकर्रिरों, नातख्वानों को दी है इन अइम्मा ए किराम की खिदमत में पेश की होती।



अइम्मा ए किराम कसबे हलाल के दीगर ज़राए भी इख्तियार करें:

अइम्मा हज़रात इमामत के साथ साथ कसबे हलाल के दीगर ज़राए और वसाइल भी इख्तियार करें सिर्फ इमामत पर तक्किया करके न बैठें।

दुआ है कि मौला करीम कौमे मुस्लिम को तमाम बातों पर अमल की तौफीक अता फरमाए।

आमीन



मुत्तहिदा सुन्नी क़यादत मुमकिन या महज़ ख़्याल

फरदीन अहमद खान रज़वी

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह तआला ने अपने कलामे हकीम कुरआने मजीद के अंदर इंसानियत को मुत्तहिद रहने और इफतिराक से बचने का दर्स जा बजा दिया है। जंग का मैदान हो या बाहमी नशिस्त व बर्खास्त हर मौका और महल पर मुसलमानों को चाहिए कि आपस में हमेशा शीरो शकर बन कर रहें। इफतिराक़ और इंतिशार को ज़र्रा बराबर भी पनपने की जगह फराहम ना करें और ऐसे ज़रासीम जिनकी गिज़ा इख्तेलाफ है उन्हें अपने से दूर कर दें। आसारे इस्लामिया का मुतालेआ करने से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि मुसलमानों का तरीक़ा ए कार दुनियावी और दीनी हर लिहाज़ से ऐसा होना चाहिए कि जिससे दिलों में नजदीकियां बढ़ें, क़ल्बी मोहब्बत को फरोग मिले, वाहमी इत्तेफाक फूले फले और लोग आपस में भाई भाई बन कर रहें। अनकरीब इस मज़मून में हम अहकाम और फरामीन पर गुफ्तगू करेंगे। मगर पहले यह जान लें के सवादे आज़म अहले सुन्नत व जमाअत दुनिया की मुसलमान अक्सरियत है बल्कि अगर देखा जाए तो दुनिया में 70 से 80 फीसद मुसलमानों को अहले सुन्नत व जमाअत सुन्नी गरदाना जाता है बर्रे सगीर हिंद और पाक और



बांग्लादेश में इस जमाअत के मानने वाले कसीर तादाद में पाए जाते हैं और इस खित्ते में बिलखुसूस मुसलमान खुद को सुन्नी हनफी बरेलवी कहना पसंद करते हैं। जिसकी निस्बत 14वीं सदी हिजरी के मुजद्दिद इमाम अहमद रज़ा खान हनफी मातुरीदी कादरी अलैह रहमा की तरफ की जाती है। यहां यह सवाल ज़रूर पैदा होता है कि आखिर मुत्तहिदा क़यादत और ताकत के तसव्वुर में गैर सुन्नी हज़रात को शुमूलियत क्यों नहीं दी गई? जिसका सादा सा जवाब यही है कि गैर सुन्नी हज़रात अहले सुन्नत व जमाअत से उसूली इख्तेलाफात रखते हैं। और यह बात कराइन से साबित शुदा है कि फुरूई, आरज़ी या ज़ाती इख्तेलाफात को परे रखकर कोई मुत्ताहिदा ताकत तो कायम की जा सकती है, मगर जहां नज़रियाती इख्तेलाफ, ज़ाती राय से आगे बढ़ कर उसूलों पर आ जाए वहाँ इत्तेहाद की बात उसूलों से समझौता है और ये क़तअन रवा नहीं। अब इत्तेहाद और इत्तेफ़ाक पर गुफ्तो शनीद से पहले लाज़िम है कि हम मौजूदा हालात, इत्तेहाद होने के मुमकिन मौके और इत्तेहाद को ख़त्म करने वाले मवानेए पर सोच बिचार करें।

हालाते हाज़िरा का नक़्शा:

मेरा ज़मीर और कलम की दयानत दारी इस बात को गवारा नहीं करती कि जब मौजूदा हालात का खाका खींचने का तक़ाज़ा हो, मैं अपनी और अपने हम जमाअत अफराद के अहवाल को चांदी के वर्क में लपेटकर पेश करूं और यह



कहकर आगे बढ़ जाउं के "ऑल इज़ वेल" सब बढ़िया चल रहा है। हकीक़त की ऐनक लगा कर देखें तो पता चलेगा कि हम बहुत नाज़ुक वक्त से गुज़र रहे हैं। एक जहत तो हमारे अकाबेरीन कसरत और उजलत से दुनिया को अलविदा कह रहे हैं जिन के बाद आने वाले उनके जानशीन इल्ला माशा अल्लाह तआला पूरी कोशिशों के बावजूद भी उनके छोड़े हुए ख़ला को पूरा नहीं कर पा रहे। ना जाने कितनी ऐसी जगहें हैं जहां, जब तक अकाबिर ज़िंदा रहे, तहरीक/तंज़ीम/हल्क़ा मुत्तहिद रहा, मगर जूंही कुर्सी ए सदारत खाली हुई कई कई दावेदार खड़े हो गए और देखते ही देखते कुश्ती का मैदान तैयार हो गया, कुछ लोग एक दावेदार के साथ हो गए और कुछ लोग दूसरे के। और इतना ही नहीं कि अपनी सदारत का दावा करें और बस, बल्कि वो या उनके मानने वाले दूसरे दावेदार की किरदार कशी में लग जाते हैं।

फिर अगर दूसरी जहत देखें तो जगह-जगह सुन्नी मराकिज़ कायम हो रहे हैं, और एक मरकज़ पर लोगों का इत्तेफाक कम हो रहा है। यह बात बहुत अफसोस नाक है कि सुन्नी हज़रात एक मुत्तहिदा मरकज़ तस्लीम करने को तैयार नहीं है। इस बात से कोई गर्ज़ नहीं कि मेरी नज़र में मरकज़ क्या है और आपकी नज़र में क्या। सवाल तो यह पैदा होता है कि सबकी नज़र में एक मरकज़ क्यों नहीं है? जब सब ही सुन्नी हैं, सब ही बड़े हैं तो सब मिलकर किसी एक बड़े को क्यों नहीं चुन लेते? मगर ऐसा नहीं हो रहा है, बल्कि मुमकिन है



कि इस खुली हकीकत की तरफ इशारा भर करने के जुर्म में मुझे ही लोग निशाना ए तनक़ीद बनाएं खैर,

इस अजीब सूरते हाल की सबसे खौफनाक जहत यह नया फितना भी है कि आवाम उलमा की जिनाब में लब कुशाई करने लगी है। मक़ाम और मर्तबा, पास और लिहाज़, उम्र और बुज़ुर्गी की परवाह किए बगैर लोग अकाबिर उलमा के किरदार, उनके अहवाल और नज़रियात पर ग़लीज़ जुमले इस्तेमाल करते नज़र आते हैं। इन पाक बाज़ हस्तियों के खिलाफ रज़ील अल्फ़ाज़ बोलते हुए इन्हें इस बात की ज़रा भी सुध बुध नहीं होती कि वो किसके बारे में क्या कह रहे हैं। एक आमी को एक फक़ीह का गुस्ताख किसने बना दिया यह सवाल मौजूदा वक्त में बेअदबी के तदारुक की कलीद है। और जान की अमान मिले तो यह अर्ज़ करना गलत ना होगा कि इस पूरे वाकिये में कुछ हाथ उन चापलूस, मक्कार और फित्ना परवर हवारियों का भी है जो हर खित्ते में पाए जाते हैं, हर खानकाह से दो गली की दूरी पर रहते हैं और सोशल मीडिया पर तक़द्दुस मआब बनकर लोगों को गुमराह करते हैं। उन लोगों को खुद भले ही प्यार के दो अक्षर ना आते हो मगर वह जो इल्म और हिकमत और मोहब्बत के क़ामूस पीये बैठे हैं उन पर हर्फ गिरी करते नज़र आते हैं, और कहते हैं "आखिर उन्होंने ऐसा क्यों कर दिया? वह गुमराही क्यों फैला रहे हैं? वह हमारे रिवायती त़रीक़ क्यों छोड़ रहे हैं? अवाम को उनका मुक़ातेआ(बायकॉट) करना चाहिए वगैरह।



फिर कहीं दीदह दानिसता लोग मज़हब को अपने ज़ाती मफाद के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर उनके मखदूम को मखदूम ना माने तो वह सियासी दांव पेंच खेलकर आपको अपना बयान बदलने पर मजबूर करेंगे या अगर आप उनके नज़रियात में मौजूद किसी खराबी की तरफ इशारा भर कर दें तो आपके किरदार पर हमला होने और आपकी ज़ाती ज़िदगी में खोजबीन कर के आप को बदनाम करने की कोशिश होने का पूरा-पूरा एहतिमाल है अल्लाह हम सब को महफूज़ रखे।

इत्तेहाद में हाइल मवानेअ [रूकावटें]:

हालाते हाज़िरा का जायज़ा लेने से मालूम होता है कि इत्तेहादे अहले सुन्नत की इस मुहिम में कई एक मवानेअ मौजूद हैं। इल्मी और फिक्री इख्तेलाफात ज़ाती रंग ले लेते हैं, यह भी एक बड़ी वजह है कि आज हम मुत्ताहिद नहीं हो पा रहे। अब सवाल यह नहीं रह गया है कि कौन सा कौल ताकतवर है या कौन सी दलील मज़बूत बल्कि सवाल अब यह पूछा जाता है कि जब "मैं" ने तहकीक कर दी तो "तुम" ने उस पर मज़ीद तहकीक कैसे की? जब मैंने एक हुक्म सुना दिया तो तुम दूसरा क्यों लाए? जब मेरी बात शाया हो चुकी है तो तुम्हारी मजाल कैसे हुई कि उसी मौज़ू पर क़लम उठाया? और अगर वह तहकीक उनके खिलाफ हो तब तो गोया आपने अपनी कब्र खोद ली, अब तो आपको दज्जाल ए ज़माना साबित किए बगैर आपके हरीफ चैन से नहीं बैठेंगे। मुमकिन है आपकी मजलिसों से दूर रहने की हिदायतें दी जाएं, आप की



किताबों पर पाबंदी आइद की जाए या आपकी शख्सियत को ही गैर मोअतबर बता कर दुनिया भर में शाया किया जाए।

इसके साथ एक तबका वो भी पैदा हो चुका है जिसके लिए इतना काफी नहीं कि आप भी सुन्नी हनफी कादरी हैं खुदा और रसूल ﷺ के सच्चे मानने वाले हैं, अक़ाइदे अहले सुन्नत पर गामज़न हैं, जी नहीं, आप को एतिबार की मोहर तब ही मिल सकती है जब आप उनकी मखसूस खानकाह के शैदाई हों, एक मखसूस पीर के मुरीद हों, एक मखसूस मुताय्यन तरीका ए तर्ज़ के हामिल हो। इसी बिना पर यहां "अपने" और "पराए" की शनाख्त की जाती है। इसको यूं समझें कि आप अकाइदे अहले सुन्नत पर मज़बूती से गामज़न हैं, कोई अकीदा और अमल की खराबी आपमें नहीं, उस वक्त तक आप बस एक नॉर्मल इंसान हैं, अब अगर आपको एतिबार की सनद चाहिए तो आप को उन अफराद की ही मखसूस तंज़ीम का हिस्सा बनना होगा, अगर आप किसी और सुन्नी तंज़ीम का हिस्सा बन गए या किसी और सुन्नी सही उल अकीदा खानकाह के शैदाई हो गए या किसी और मुकद्दस मआब के हाथ पर मुरीद हो गए तो आप कुछ भी कर ले आपको उस हल्के में ना तो शुमूलियत मिलेगी और ना ही कभी एतिबार इसे कहते हैं एतिबार की "तख्सीस" और तो और एक खानकाह का मुरीद दूसरी खानकाह के पीर की सुनने को तैयार नहीं, उनकी शख्सियत को तसलीम करने को तैयार नहीं, एक तंज़ीम का रज़ाकार दूसरी तंज़ीम के लिए बेकार है, एक इदारे का खिदमतगार दूसरे इदारे से बेसरोकार है। अगर एक



आदमी सखी है तो वह सिर्फ एक मखसूस इदारे/ तंज़ीम/तहरीक के लिए सखी है, मजाल है कि दूसरे को एक ढेला भी इनायत करें! अब उसे खुदगरज़ी कहिए या कुछ और मगर बहुत सी जगहों पर यही हकीक़त का रूप धार चुकी है।

इन बातों से मुंह फेर लेना, इनका इनकार करना अक्सर लोगों का शेवा बन चुका है, और फितरी कहें भी क्या कि उनका तदारुक कर के मुसबत इक़दामात उठाने से ज़्यादा आसान यही है कि सिरे से किसी परेशानी का ही इंकार कर दो। बस "ऑल इज़ वैल" सब बढ़िया है बोल कर आगे बढ़ लो। मगर मुझे यकीन है कि जिंदा दिल जां बर ज़मीर और सालिम फिक्र वाले अफराद मेरी गुफ्तगू को ज़रूर संजीदगी से मुलाहिज़ा फरमा रहे होंगे। और यह भी जान रहे होंगे कि यह सब मेरी ज़हनी खलफिशार का गुबार नहीं बल्कि अपनी मिल्लत का इरादा शीराज़ा बिखरते हुए देखकर उबलता हुआ मेरा दर्द है जिसने कलम की ज़ुबान इख्तियार कर ली है। अब आइए इन असबाब और इलल की रोशनी में अपने अहवाल की चारा सज़ी करने पर कुछ बातचीत कर लें।

इत्तेहाद के इम्कानात और मौके:

अहले सुन्नत व जमाअत का आपस में मुत्तहिद होना हमारी और हमारी रिवायात की बक़ा के लिए अशद ज़रूरी है। जैसा कि उम्मत के एक हकीम और दाना दुर्वेश सिफत क़ाइद का कौल है: "इत्तेहाद ज़िंदगी है और इख्तेलाफ मौत



है"लिहाज़ा हम पर यह लाज़िम हैं कि अपनी मिल्लत को बक़ा और दवाम फराहम करें ना कि उसकी जड़ें अपनी ज़ाती मफाद के लिए काटें। रहमान और रहीम रब के कुरआन में है कि:

"और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो। सब मिलकर और आपस में फट ना जाना (फ़्रिकों में बट ना जाना) और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था (दुश्मनी थी) उसने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उसके फज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए।

(अल इमरान:103)

इस आयते जलीला से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि हम सब जो की उम्मते वाहिद से ताल्लुक रखते हैं, हमें चाहिए कि आपस में गिरोहों में ना बट जाएं, जब हमारा खुदा एक, रसूल एक, अक़ीदा एक, मसलक एक,नज़रिया एक तो हमें यह हरगिज़ ज़ेब नहीं देता कि महज़ ज़ाती मफाद के मक़तल पर इत्तेफाक़ को ज़बीहा बना लें। आयते मुबारका से यह बात भी वाशिगाफ होती है कि बाहमी भाईचारगी अल्लाह तआला की एक अज़ीम नेमत है जिसकी ना शुकरी हमारी हलाकत का पेश खेमा साबित हो सकती है। एक और जगह कुरआन में असहाबे रसूल ﷺ की सिफात बयान करते हुए ख़ालिके कायनात ने फरमाया:



"मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले काफिरों पर सख्त हैं और आपस में नरम दिल"

(अल फतह: 49)

यहां भी हमारे लिए बाहमी इत्तेफ़ाक और भाईचारे का दर्स मौजूद है, अगर हम भी असहाबे रसूल ﷺ के नक्शे कदम पर चलने का दम भरते हैं तो हमें भी चाहिए आपस में नरम दिल बन कर रहें। अपने बड़ों की इज़्ज़त करें, छोटों की गलतियों को माफ करें, यारों की बातों से कभी कभी दर गुज़र से काम लिया करें और अपने आप को उस अज़ीमुश्शान समंदर जैसा बना लें जिसके सामने कितना ही गलीज़ माद्दा आए, उस में डाला जाए मगर वह अपना साफ और शफ्फाफ रंग कभी नहीं छोड़ता, बल्कि यूं कहें कि उसकी सेहत पर उसका कोई असर नहीं होता वो साफ का साफ ही रहता है।

अगर किसी को लगता है कि इत्तेफ़ाक बहुत आराम से हो जाएगा तो ये उसकी खाम ख्याली है. बल्कि मैं तो आपको गैज़ो गज़ब के तलातुम में अपने आप पर काबू रखने की बात कर रहा हूं। अपनी नज़र को वुस'अत और इख्तेलाफ की गुंजाइश देने की बात कर रहा हूं। जब कोई मामला उसूली नहीं है और हर एक के पास अपने दलाइल हैं तो किसी को बुरा कहना क्यों कर बजा हो सकता है? ज़रा खुद सोचिए मैं तो कहता हूं सब हमारे हैं, सब मखदूम हैं, और सब मुअज़्ज़ज़ हैं जब हम अक़ाइद में एक हैं मामूलात में एक हैं और नज़रियात में



भी एक हैं तो महज़ चंद मसाइल में इख्तिलाफ होने से कोई पराया तो नहीं हो जाता ना?

इसलिए मेरे अज़ीज़ों! अल्लाह तआला और रसूल ﷺ के चाहने वालों! सहाबा के मतवालों! औलिया के मस्तानों और मशाइख के दीवानों! आओ हम सब मिलकर इन बुग्ज़ और कीना की दीवारों को मिसमार कर दें और दुनिया को पैग़ाम दें कि हम सब एक थे, एक हैं और एक ही रहेंगे आओ हम तमाम उलमा का अदब करें, हर पीर की ताज़ीम करें और हर मुहक़्क़िक को उसकी फिक्री आज़ादी दें ताकि अहले सुन्नत व जमाअत के मानने वाले सुन्नी अफराद दुनिया के उफक़ पर छा जाएं और एक मुत्तहिद ताकत बनकर उभरें किसी ने पूछा था, मुत्तहिदा सुन्नी क़यादत: मुमकिन या महज़ ख्याल? मैं कहता हूं मुमकिन और बहुत जल्द हकीकते वाकिया इंशा अल्लाह तआला! अल्लाह तआला हमें दुनिया और उक़बा में कामयाबी और कामरानी से हमकिनार फरमाए।

आमीन या रब्बल आलमीन।



हदीसे पाक لا نبی بعدی

यानी "मेरे बाद कोई नबी नहीं" की तहकीक

फैज़ुल आरफीन रज़वी

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ فُرَاتٍ الْقَزَّازِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ قَالَ قَاعَدْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ خَمْسَ سِنِينَ فَسَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمْ الْأَنْبِيَاءُ كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ وَإِنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِي وَسَيَكُونُ خُلَفَاءُ فَيَكْثُرُونَ قَالُوا فَمَا تَأْمُرُنَا قَالَ فُوا بِبَيْعَةِ الْأَوَّلِ فَالْأَوَّلِ أَعْطُوهُمْ حَقَّهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ سَائِلُهُمْ عَمَّا اسْتَرْعَاهُمْ

तर्जुमा: इमाम बुखारी फरमाते हैं कि हम से हदीस बयान की मोहम्मद बिन बशार ने हम से मोहम्मद बिन जाफर ने बयान किया, कहा हमसे शोबा ने बयान किया, उनसे फुरात क़ज़्ज़ार ने बयान किया, उन्होंने अबू हाज़िम से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं हज़रत अबू हुरैरह रदिअल्लाहु तआला अन्हु की मजलिस में 5 साल तक बैठा हूं मैंने उन्हें रसूल-अल्लाह ﷺ की यह हदीस बयान करते सुना कि आप ﷺ ने फरमाया बनी इसराईल के अंम्बिया उनकी सियासी रहनुमाई भी क्या करते थे जब भी उनका कोई नबी दुनिया से चला जाता तो दूसरे उनकी जगह ले लेते, लेकिन याद रखो मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा। हां मेरे नायब होंगे और बहुत होंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया कि उनके मुताल्लिक आपका हमें क्या हुक्म है आप ﷺ ने फरमाया की सबसे पहले जिस से बैअत



करो बस उसी की वफादारी पर कायम रहो और उनका जो हक है उसकी अदायगी में कोताही ना करो क्योंकि अल्लाह तआला उनसे कयामत के दिन उनकी रिआया के बारे में सवाल करेगा।

(सही बुखारी, किताब: अंम्बिया अलैहिम अस्सलाम का बयान, बाब: बनी इसराईल के वाक़ियात का बयान, हदीस नंबर: 3455)

हदीस के रावी:

(1) मुहम्मद बिन बशार:

जिनका लकब बिन्दार है। कुन्नियत अबू बक्र लेकिन ये मशहूर बिन्दार के लकब से ही हैं, बसरा के रहने वाले थे। जिनकी विलादत 167 हिजरी की है और वफात 252 हिजरी की है।

उलमा के अक़वाल:

इब्ने दौरक़ी कहते हैं कि हम याहया बिन मोईन के पास थे उनके सामने बिन्दार का ज़िक्र हुआ तो याहया बिन मोईन ने उनकी तज़ईफ़ फरमाई [यानी उन्हें ज़ईफ रावी कहा] लेकिन अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी अलैह रहमा ने तक़रीब अत-तहज़ीब में फरमाया कि बिन्दार सिक़ा (मोअतमद) हैं। अबू हातिम राज़ी ने आपके बारे में लफ्ज़ सदूक़ (सदूक़ ये अल्फाज़े त'अदील में से एक लफ़्ज़ है जिसका दर्जा सिक़ा से कम है) इरशाद फरमाया- इमाम निसाई ने फरमाया कि बिन्दार स्वालेह हैं उनसे रिवायत लेने में कोई हर्ज नहीं है। दार



-कुतनी ने आपका ज़िक्र हुफ्फाज़े हदीस में किया है। इब्ने हिब्बान ने आपका ज़िक्र सिक़ाते रुबात [मोतमद रावियों] में किया है। सुल्लमी ने फरमाया कि अमर बिन अली से पूछा गया अबू मुसा और बिन्दार के बारे में, तो आपने फरमाया की दोनों सिक़ा[मोतमद] हैं उन में से हर एक की हदीस को कबूल किया जाता है। खतीब बग़दादी ने कहा कि उनकी हदीसें बहुत मशहूर हैं और वो सिक़ा हैं।

हवाले:

(तक़रीब उत तहज़ीब/ तहज़ीब उत तहज़ीब/ अज-जिरह वत- ताअदील/ तसमियतुश शैख लिल-निसाई/ तहज़ीबुल कमाल/ अस-सिक़ात लि-इब्ने हिब्बान/ तारीखे बग़दाद)

(2) मुहम्मद इब्ने जाफर हज़ली:

इनका लकब ग़ुनदर है और कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह, ये भी बसरा के ही रहने वाले थे इनकी विलादत 110 हिजरी में हुई और वफात 193 या 194 हिजरी में हुई।

उलमा के अक़वाल

अब्दुल वलीद बाजी ने फरमाया कि याहया इब्ने मोईन ने त'अदील और तख़रीज में मुहम्मद इब्ने जाफर की तज़ईफ फरमाई है। अल्लामा इब्ने हजर



असक़लानी अलैह रहमा ने फरमाया कि मुहम्मद इब्ने जाफ़र सिक़ा हैं सहीहुल किताब हैं मगर उनमें कुछ गफ़लत है। दारमी ने फरमाया कि मुहम्मद इब्ने जाफ़र सिक़ा हैं और अबू हातिम राज़ी ने फरमाया कि गुन्दर सदूक़ हैं और इब्ने हिब्बान ने उनका ज़िक्र तब'ए ताबे'ईन के तबक़े में सिक़ाते रुवात में किया है।

हवाले:

(तहज़ीब उत तहज़ीब/ तक़रीब उत तहज़ीब/ तारीख उद दारमी/ अज-जिरह वत-ता'अदील)

(3) शोबा:

जिनकी कुन्नियत अबू बुसताम है लेकिन इनकी शोहरत शोबा से ही है। ये भी बसरा में रहते थे। जिनकी विलादत 82 हिजरी में हुई बाज़ ने फरमाया 83 हिजरी और बाज़ ने फरमाया 85 हिजरी और बाज़ ने फरमाया 87 हिजरी में हुई और वफात 160 हिजरी में हुई। इनकी पैदाइश तो मक़ामे वासित में हुई लेकिन वफात बसरा में ही हुई।

उलमा के अक़वाल:

इब्ने मुहर्रिज़ से पूछा गया कि सुफियान सौरी असबत हैं या शोबा? तो उन्होंने फरमाया कि सुफियान सौरी। फिर याहया बिन मोईन ने फरमाया कि शोबा सिक़ा हैं लेकिन असमाए रिजाल में ख़ता करते हैं और हाशिम ने फरमाया कि



शोबा ज़्यादा सिक़ा हैं। तारीख बग़दाद में आया है कि शोबा सिक़ा हैं और असमाए रिजाल में कुछ ख़ता करते हैं।

अबू हातिम राज़ी ने फरमाया की शोबा सिक़ा रावी हैं।

अब देखें अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी अलैह रहमा शोबा के बारे में क्या फरमाते हैं? तक़रीबत उत तहज़ीब में फरमाते हैं कि इमाम शोबा सिक़ा हैं और यकीनन हाफिज़े हदीस हैं और सौरी फरमाते हैं कि शोबा अमीरूल मोमिनीन फिल हदीस हैं और ज़हबी ने काशिफ में भी इमाम शोबा को अमीरुल मोमिनीन फिल हदीस क़रार दिया है।

हवाले:

(तहज़ीब उत तहज़ीब/तक़रीबुत उत तहज़ीब/अज-जिरह वत-ताअ'दील/अलकाशिफ/तारीखुल बग़दाद/तारीख इब्ने मोईन रिवायत उत दौरी)

(4) फुरात अल क़ज़्ज़ार:

इनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद या अबू अब्दुल्लाह है। कूफा के रहने वाले थे।

उलमा के अक़वाल:



याहया इब्ने मोईन ने इनके बारे में फरमाया कि ये स्वालेह उल हदीस हैं और इमाम ज़हबी ने काशिफ में इनकी सिक़ाहत ही को बयान किया और अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी अलैह रहमा ने भी आपके बारे में यही फरमाया कि ये सिक़ा हैं।

हवाले:

(तारीख इब्ने मोईन रिवायत उद दौर/अल-काशिफ लिज़-ज़हबी/तक़रीब उत तहज़ीब)

(5) अबू हाज़िम:

आपकी शोहरत अबू हाज़िम अशजई से है। आप कूफा के रहने वाले थे। आपकी वफात 100 हिजरी या 101 हिजरी की है। आपका शुमार अबू हुरैरह के शागिर्दों में होता है।

उलमा के अक़वाल:

याहया बिन मोईन ने फरमाया कि अबू हाज़िम सिक़ा हैं। अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी अलैह रहमा ने भी अबू हाज़िम के बारे में सिक़ाहत का क़ौल किया है।

हवाले:

(तारीख इब्ने मोईन रिवायत उद दौर/तक़रीब उत तहज़ीब)



(6) जलील उल क़दर सहाबी ए रसूल हज़रत अबू हुरैरह रदिअल्लाहु तआला अन्हु

आपके नाम में बहुत इख्तेलाफ पाया जाता है लेकिन सही ये है कि आप का नाम अब्दुर रहमान बिन सख़्र है। आप कबीला ए दौस के रहने वाले थे। 7 हिजरी में फतह खैबर के बाद आप हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और फिर आखिरी दम तक मदीना तय्यबा में हाज़िर रहे। आपसे पांच हजार तीन सौ चौहत्तर अहादीस मरवी हैं। आपसे आठ सौ से ज़्यादा रावियाने हदीस ने रिवायते हदीस की है। आपका विसाल 78 साल की उम्र में 57 हिजरी या 58 हिजरी को मदीना तय्यबा में हुआ और जन्नतुल बक़'ई में दफन हुए।

तख़रीजे हदीस:

ये अल्फाज़ (لا نبی بعدی) यानी मेरे बाद कोई नबी नहीं, रसूल ए अकरम ﷺ से हज़रत अबू हुरैरह ने रिवायत किए उसको इमाम मुस्लिम ने सही मुस्लिम में किताबुल इमारत बाब वुजूब उल वफा बैअतुल खुलफा हदीस नंबर 1842 में, और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रदिअल्लाह तआला अन्हु ने सही मुस्लिम, किताब उल फज़ाइल उस सहाबा, बाब मिन फज़ाइले अली बिन अबी तालिब रदिअल्लाहु तआला अनहु हदीस नंबर 2404 में, और हज़रत सोबान बिन बजदाद रदिअल्लाहु तआला अनहु ने जामेअ़ तिरमिज़ी, अबवाब उल फितन अन रसूलिल्लाहि ﷺ, बाब ला तक़ूमुस साआति हत्ता यख़रुजु कज़्ज़ाबून, हदीस नंबर 2219 में इमाम तिरमिज़ी ने फरमाया कि हदीस सही है और हज़रत



सोबान ने ही सुनन अबू दाऊद, किताब उल फितन वल मलाहिम,बाब ज़िक्र उल फितन व दलाइलिहा, हदीस नंबर 4252 में, और मुस्तदरक हाकिम में हदीस नंबर 8390 में सही इसनाद के साथ बयान की।



क़ायदीन की खामोश मिज़ाजी: मिल्लत की तबाही का पेश खेमा

✍ मुफीज़ुद्दीन मिस्बाही

क़ाइद अरबी ज़ुबान से मुशतक़ इस्मे फेअल है इसकी जमा क़ायदीन है, और उर्दू ज़बान में मायनै और साख्त के लिहाज़ से बे-ऐनेही दाखिल हुआ और बतौरे नाम इस्तेमाल किया जाता है।

तख़्लीक़े कायनात से ले कर आज तक हर ज़माने में क़ाइद और क़यादत का तसव्वुर मौजूद है। और इंसानी बिरादरी के लिए ये तशरीफे शर्फ यानी लिबासे फ़ाख़िरा, ख़िलअते बुज़ुर्गी से कम नहीं है। और साथ ही साथ अल्लाह तआला की तरफ से ये अज़ीम नेमत और अमानत है, क्यूंकि क़यादत नाम है उस हिकमत और तदबीर, मन्सूबा बंदी का जिसके ज़रिए इंसानी गिरोह के मफादात मसालेह,या किसी इंसानी गिरोह या जमाअत के साथ इस तरह के ताल्लुकात और मुआहिदात तय किए जाते हैं या फिर कोशिशें की जाती हैं जो अपनी कौम और मिल्लत के हुक़ूक को ज़्यादा से ज़्यादा तहफ्फुज़ अदा कर सकें।

बेहतरीन क़ाइद की कुछ खुसुसियात:



(1) अच्छा रहनुमा और क़ाइद वो होता है जो हक़ से भटकी हुई बदहाल कौम को बे आसरा नहीं छोड़ता।

(2) खस्ता हाल कौम के असल मर्ज़ की तशख़ीस करता है, हमागीर जद्दो जहद से उसका इलाज करके शिफायाबी तक मुसलसल रहनुमाई करता है।

(3) वो लोगों में बातिल के खिलाफ उठ खड़े होने का हौसला पैदा करता है।

(4) नाकामी और मायूसी का लफ्ज़ उसकी डिक्शनरी में नहीं होता।

(5) लोगों को उनके आमाल के हवाले से बर वक्त अच्छे और बुरे अंजाम से आगाह करता है।

(6) वह दुनियावी माल और मताअ का ना तो खुद लालची होता है ना दूसरे को लालची होने देता है।

(7) उसकी हैसियत लाचार और मजबूर कौम के लिए एक मसीहा की सी होती है।

(8) वो ऐसे निज़ामे अमल से मुत'आरिफ करवाता है कि जिस पर चलते हुए मंज़िल तक पहुंचना उनके लिए नामुमकिन नहीं रहता।

(9)अच्छा क़ाइद लोगों के हालतों को बदलने में शबो रोज़ कोशां रहता है।

(10) वो अपनी शख्सियत, किरदार और फिक्र से उनकी तरबियत करता है।



(11) हकीक़ी लीडर वही होता है जो अपनी सलाहियतों को बरूए कार लाते हुए मुआशरे को हज़ारों लीडर दे जाता है।

(12) और सबसे बड़ी बात यह है कि सच्चा लीडर, क़ाइद अहकामे खुदा बंदी का खुद सख्ती से पाबंद होता है और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी उसकी ज़िंदगी का मक़सद और नसबुलऐन होता है।

मौजूदा वक्त में इन खुसूसियात के हामिल अफराद तलाश करना गोया कि "अन्क़ा" परिंदे की तलाश करना है; लेकिन फिर भी जिन लोगों पर क़ायदीन का इतलाक़ होता है उसी हवाले से थोड़ी सी गुफ्तगू करूंगा:

आज पूरी दुनिया में मुसलमानों की हालत किसी से मख्फी नहीं है और रोज़ ब रोज़ उनकी हालत खौफज़दा होती जा रही है। बेशुमार कुदरती वसाइल से मालामाल होने के बावजूद अपनी ज़ाती मफादात, बाहमी कश्मकश, और दुनियावी ऐशो इशरत और मनसब, अज़मतg की चाह ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा। गुज़िश्ता दहाइयों के मुकाबले में ज़वाल की तरफ माइल, नापायदार और अदमे इस्तिहकाम का शिकार है।अगर हम आलमे इस्लाम की सबसे बड़ी तंज़ीम ओआईसी की बात करें तो इस तंज़ीम ने अपने प्लेटफार्म से अपने कयाम से लेकर आज तक मुसलमानों के तहफ्फुज़ और मसाइल के हल के सिलसिले में सिवाए इजलासो के कुछ नहीं किया। ओआईसी एक बैनुल अक़वामी तंज़ीम है जिसका क़याम 21 अगस्त 1969 को मस्जिदे अक्सा पर



यहूदी हमले के रद्दे अमल के तौर पर 25 सितंबर 1969 को मराकश के शहर रूबात में अमल में आया। और इसमें मशरिके वुस्ता, शुमाली, मगरीबी और जुनूबी अफ्रीका, वस्ता एशिया और यूरुप, जुनूबी मशरिकी एशिया और बर्रे सगीर, तकरीबन 57 मुस्लिम अक्सरियती ममालिक शामिल हैं। इसका मक़सद आलम ए इस्लाम को दरपेश मसाइल पर गौर और उनका हल तजबीज़ करना था, नेज़ इस्लामोफोबिया से निपटने के लिए मुश्तरका लाहे अमल तैयार करना था, लेकिन बदकिस्मती से उनकी हैसियत कठपुतली से ज़्यादा नहीं। इन्होंने अपनी ज़िंदगी का ज़्यादा हिस्सा यहूदी, नसरानी आकाओं को खुश करने में गुज़ार दिया। यही वजह है कि कौमे मुस्लिम के साथ इन्हें भी कभी कभी इस ज़िल्लत और रुसवाई का सामना करना पड़ रहा है।

कौम की मौत और ज़ीस्त और उरूज़ो ज़वाल के असबाब क़ाइद के अपने क़ायदाना रोल के अंदर पोशीदा होते हैं। बेहतर क़ाइद वो है जो कौमी मफादात की खातिर हर तरह की कुर्बानियां पेश करने का जज़्बा रखता हो। कौमी हालात की बेहतरी की खातिर कोशिशें करता हो और ऐसी मंसूबा बंदी जो कौम को आगे ले जाए। लेकिन हमारे सियासी मुस्लिम रहनुमाओं ने मुआशरे की तरक्की के बजाए अपने सियासी कैरियर पर ज़्यादा तवज्जो मरकूज़ की। यही वजह है कि कौमे मुस्लिम भी उनसे बेज़ार है, हालांकि मौजूदा वक्त में उम्मते मुस्लिमा को शदीद मुश्किलात का सामना है।



और अगर हम मुल्के हिंदुस्तान की बात करें तो तक़्सीमे हिंद से हमारी कमर टूट गई, जंगे आज़ादी में सबसे ज़्यादा कुर्बानियां पेश करने के बावजूद करम फरमाओ ने हमसे इम्तियाज़ी सुलूक रवा रखा लेकिन फिर भी हम में ऐसे अफराद मौजूद थे जो अपने ज़ाती मफादात को बालाएं ताक़ रखकर के कौमी, मिल्ली मफादात को तरजीह देते थे। इनके खिलाफ उठने वाली आवाज़ का जवाब देने की ताकत रखते थे, लेकिन ज़माने के गुज़रने के साथ साथ सियासी, समाजी, मुआशी और तालीमी पिछड़ेपन ने हमें ज़िल्लत और रुसवाई के गहरे गड्ढे में धकेल दिया और अब इसके हल के लिए अमली एकदामात पर कोई आमादा नहीं है। यही वजह है कि मौजूदा वक्त में मुसलमानों को "मुस्लिम पर्सनल लॉ" में तब्दीली, शुमाली हिंद में "गौकशी", "लव जिहाद" के बहाने गैर इंसानी क्राइम "मॉब लिंचिंग", "शान ए रिसालत ﷺ में गुस्ताखी" मीडिया के ज़रिए मुसत्किल तौर पर मुसलमानों के साथ इम्तियाज़ी सुलूक और बरताओ जैसे पेचीदा मसाइल का सामना है और अपनी कौम और हमारे कायदीन के पास इन मसाइल को हल करने के लिए कोई लाहे अमल नहीं है। और शायद गुज़िश्ता दो-तीन साल में तीन तलाक, हेट क्राइम, सी ए ए, एनआरसी, और तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत ﷺ वो अहम मामलात रहे हैं जिसने मुस्लिम कायदीन की कयादत पर सवालिया निशान लगा दिया है।



और अब तो बात यहां तक पहुंच चुकी है कि लोग मुसलमानों के कत्लेआम के तरीके सोच रहे हैं जैसा कि हाल ही में हरिद्वार में एक नाम निहाद "धर्म संसद" का एहतिमाम हुआ, जिसमें शिद्दत पसंद पुजारियों ने भड़काऊ तकरीरें कीं, जिसको लेकर गैर मुल्की मीडिया ने शदीद रद्दे अमल ज़ाहिर किया, मगर हमारे मुल्क का मीडिया, यहां की सरकार इस मामले में बिल्कुल खामोश रही और हमारे कायदीन तो पहले से ही किसी बोलने की पोज़ीशन में नहीं हैं।

अल्लाह ही इनका मुहाफिज़ है।

सबक फिर पढ़ सदाकत का, अदालत का, शुजाअत का,

लिया जाएगा तुझसे काम दुनिया की इमामत का।



About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.



नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

बरेली शरीफ

https://www.nizamemustafa.in/

Contact us: 9675801762,9720315389